आजादी का अमृत महोत्सव

रेल संगम

जुलाई-सितंबर, 2021

हिंदी है
पहचान हमारी
हिंदी हम सब की परिभाषा



उत्तर मध्य रेलवे - प्रयागराज

प्रमोद कुमार
महाप्रबंधक
Pramod Kumar
General Manager





उत्तर मध्य रेलवे
NORTH CENTRAL RAILWAY

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राजभाषा विभाग द्वारा त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'रेल संगम' का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चित रूप से यह एक सराहनीय प्रयास है। राजभाषा पत्रिका के प्रकाशन का प्राथमिक उद्देश्य राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाना है। इसके अतिरिक्त इन पत्रिकाओं के माध्यम से रेलकर्मियों का, अपनी भाषा, संस्कृति और रचनात्मक विधाओं के साथ जुड़ाव मजबूत होता है। राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए नियमों और आदेशों के अनुपालन के साथ-साथ पत्रिका जैसा सृजनात्मक मंच भी जरूरी है, जिससे कर्मचारीगण अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़कर स्वप्रेरणा से राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करें। हिंदी के प्रयोग को आज के सामयिक और आधुनिक विषयों से जोड़कर इसे समय और युग के अनुकूल सहज एवं समृद्ध बनाना भी जरूरी है। राजभाषा पत्रिका इसके लिए विशिष्ट एवं सार्थक भूमिका निभा सकती है।

मैं 'रेल संगम' के निरंतर सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(प्रमोद कुमार)
महाप्रबंधक

उत्तर मध्य रेलवे - राजभाषा पत्रिका

रेल संगम

जुलाई-सितंबर, 2021 | त्रैमासिक | अंक - 46

संरक्षक
प्रमोद कुमार
महाप्रबंधक

मार्गदर्शन
रंजन यादव
अपर महाप्रबंधक

मुख्य संपादक
अजय माथुर
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान वित्त सलाहकार

प्रधान संपादक
शैलेन्द्र कुमार सिंह
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप विसमुलेधि/वित्त एवं बजट

संपादक
चन्द्र भूषण पाण्डेय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
कृपा शंकर मिश्र
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/निर्माण

सहायक संपादक
यथार्थ पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी

संपादन सहयोग
नन्हे लाल यादव
वरिष्ठ अनुवादक

फोटो सहयोग
अमित मालवीय, वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी

-: संपर्क :-
महाप्रबंधक कार्यालय
राजभाषा विभाग
उत्तर मध्य रेलवे, सूबेदारगंज
प्रयागराज - 211015
ई-मेल: pandeyrba@gmail.com
srhindiofficer@ncr.railnet.gov.in

-: नोट :-
पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

अनुक्रम

			पृष्ठ
1.	संपादकीय		2
2.	जानि सरद रितु खंजन आए	डॉ. राजेश हजेला	3
3.	शांति की खोज में	ओम प्रकाश मिश्र	6
4.	वीरों की पहचान	सी.एल. वर्मा	9
5.	सब विधि सोचिअ पर अपकारी	पं. रामनरेश तिवारी 'पिंडीवासा'	10
6.	बेटी का धन	प्रेमचंद	12
7.	झाँसी की रानी	सुभद्रा कुमारी चौहान	17
8.	वापसी का अहसास	आचार्य नीरज शास्त्री	23
9.	सुरक्षा कवच योग	मनमोहन भटनागर	25
10.	ईश्वर की पुकार	सोमेश पांडेय	26
11.	काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	27
12.	वो ही मेरे कर्णधार थे	श्याम श्रीवास्तव 'सनम'	31
13.	आत्मबोध	सुनील कुमार गुप्ता	32
14.	समय	अनुराग पाठक	37
15.	लाचारी	के.जी. गोस्वामी	37
16.	राजभाषा प्रश्नमाला		38

संपादकीय

इस वर्ष देश की आजादी के 75 साल पूरे हो चुके हैं। राष्ट्र इस गौरवशाली मौके को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। स्वाधीनता और स्वराज का यह अमृत शताब्दियों के युगमंथन से निकला है। इस मंथन से विभाजन की त्रासदी का हलाहल भी निकला जिसे भारत वर्ष के शिवत्व ने अपने गहरे अंतस् में जज्ब कर लिया। यह विभाजन केवल द्विराष्ट्रवाद का परिणाम नहीं था, बल्कि यह बँटवारा उन्माद और कट्टरता के पैरोकारों द्वारा अपनी महान साझी विरासत के साथ किया गया खौफनाक विश्वासघात था। आज पूरी दुनिया साक्षी है कि कैसे इन्हीं शक्तियों के बल पर और इनकी छत्रछाया तले वहशी मानसिकता और मध्ययुगीन बर्बरता फल-फूल रही है। बहरहाल आजादी के इन पचहत्तर सालों में हमारे देश ने लोकतंत्र, सर्वधर्म समभाव, बंधुत्व, समानता और न्याय के संवैधानिक उच्चादर्शों के साथ उन्नति एवं तरक्की की प्रगतिशील यात्रा तय की है। हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली और संस्थाओं ने सदियों से जड़ जमा चुकी बुराइयों तथा विसंगतियों के निवारण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। आजादी के लिए जिस एकजुटता एवं राष्ट्रीय दायित्व के निर्वहन की नेक भावना के परिणामस्वरूप हमारा लोकतंत्र फलीभूत हुआ है, वह आज और अधिक प्रासंगिक है और नए एवं आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे बड़ी प्रेरणास्रोत बन सकती है।

हिंदी दिवस हिंदी के प्रसार, प्रगति और विकास का संकल्प दिवस है। हिंदी ने आज जीवन के उन क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर लिया है, जो पिछले कई दशक तक इस दृष्टि से बिल्कुल अभेद्य और अछूते थे। देश के कोने-कोने में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, बल्कि इसके सरल-सहज स्वरूप का भी प्रसार हुआ है। निःसंदेह हिंदी सिनेमा और उसके गानों, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धारावाहिकों, डांस और गानों के रियलटी शो जैसे माध्यमों को इसका अनन्य श्रेय जाता है। सूचना तकनीक और सोशल साइट्स ने इस आयाम को और अधिक परिपुष्ट किया है। यह सदियों से कलकलनिनादिनी हिंदी की गतिशील भावधारा की मौलिक शक्ति है। इसी भावधारा से जनगणमन की वेगवती राष्ट्रीय भावना को आजादी की ऊँची उड़ान के सुनहरे पंख मिले थे। जब स्वतंत्र भारत के जनगणमन का यही इंद्रधनुषी सुर टोक्यो ओलंपिक में संचरित होता है और स्वर्णपाखी नीरज चोपड़ा के अंतर्मन से यह उद्गार फूट पड़ता है कि अपनी भाषा, अपनी हिंदी पर गर्व महसूस होना चाहिए, हिंदुस्तान से हैं तो सबको हिंदी बोलनी चाहिए, तो पूरे राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। आइए, हिंदी दिवस पर संकल्प लें कि हम अपनी भाषा और लेखनी के द्वारा राष्ट्र के गौरव एवं उत्कर्ष के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे, ताकि हमारा भारत वैश्विक शक्ति की अग्रणी श्रेणी में शामिल हो सके।

हिंदी दिवस के अवसर पर 'रेल संगम' की ओर से आप सब को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जानि सरद रितु खंजन आए



- डॉ. राजेश हजेला

मानव-मन को रससिक्त करने वाला नयनों से समरसता उपजाता, शाश्वत पुण्य का प्रतीक खंजन पक्षी शरद ऋतु के आगमन का उद्घोषक है। पौराणिक साहित्य से वर्तमान काल तक के साहित्य में साहित्यकारों ने उन्मुक्त मन से शारदीय वर्णन में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे स्वयं शरद ऋतु खंजन के रूप में कमलनाल पर आरूढ होकर प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करती है। मानव को स्वास्थ्य, उल्लास और स्फूर्ति देने वाली शरद ऋतु अपने-आप में अनूठी है। साहित्य में खंजन पक्षी शरद ऋतु का एक मात्र सुहृद और रसिक शिरोमणि सूत्रधार है। गरिमामयी महिमा मंडित शरद ऋतु जहाँ एक ओर मानवीय दृष्टि का आरंभ काल है, वहीं यह पक्षी इस ऋतु की शोभा में श्री वृद्धि करता हुआ जनमानस के साथ-साथ संपूर्ण प्रकृति को आह्लाद का उत्कर्ष प्रदान करता है। यही कारण है कि भारत में बोली जाने वाली प्रायः सभी भाषाओं और बोलियों के साहित्य में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बागों में महकते हरसिंगार और हवा में झूमते कचनार के खिले फूलों को देखकर शरद ऋतु के आगमन का सुहाना संदेश स्वतः ही प्राप्त होने लगता है। जब अनार के खिले हुए लाल-लाल पुष्प अपनी मदमाती आभा बिखेरने लगते हैं और खिली हुई चाँदनी मन को उल्लासित करने लगती है तब शरद ऋतु अपने मनभावन राग सुनाती है। पुराणों में शरद ऋतु की रूप-छटा माँ सरस्वती के समकक्ष बताई गई है। द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकार राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' ने शरद ऋतु की शोभा की उपमा विद्यादायिनी देवी सरस्वती से की है

शारदीय शोभा शारदा पै बारि डारी है।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने कालजयी ग्रंथ रामचरितमानस के किष्किंधा कांड में शरद ऋतु का मौलिक और हृदयग्राही वर्णन किया है। किष्किंधा कांड में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अपने अनुज समित्रानंदन से कहते हैं कि हे लक्ष्मण! देखो वर्षा ऋतु के जाने के बाद परम सुहावनी शरद ऋतु आ गई है। काँस के मनमोहक श्वेत पुष्पों ने समस्त वसुधा को आच्छादित कर दिया है और ऐसा प्रतीत होता है मानो वर्षा ने अपना बुढ़ापा प्रकट कर दिया हो-

बरषा विगत सरद रितु आई,
लक्षिमन देखहु परम सुहाई।
फूलें कास सकल महि छाई,
जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई।

हमारे मौसम विज्ञानियों और ज्योतिर्विदों के अनुसार जब सिंह राशि के सत्रहवें अंश पर सूर्यदेव विराजमान होते हैं तब दक्षिण दिशा में अगस्त्य तारे का उदय होता है जो शरद ऋतु के आगमन का सूचक है। निर्मल चाँदनी से समस्त वसुधा का आलोकित हो जाना शरद ऋतु की प्रमुख विशेषता है।



श्रीमद्भागवत के अनुसार शरद ऋतु की इसी मोहक चाँदनी में अपनी बाँसुरी की मधुर और वशीकरण करने वाली स्वर-लहरी से नटवर नागर भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रज-मंडल की गोपियों को आकर्षित और सम्मोहित कर रासलीला का शुभारंभ किया था। उसी समय से यह मान्यता है कि अमृत के बरसते हुए कण जनमानस को स्वस्थ और निरोग करते हैं तथा नई आशा, नवोल्लास एवं नवचेतना प्रदान करते हैं। ब्रह्मवैवत पुराण के अनुसार शरद ऋतु से

ही सृष्टि का प्रारंभ काल माना गया है। देवलोक के देवता इसी ऋतु में सृष्टि के मनोहारी रूप को देखकर प्रफुल्लित होते हैं और चंद्रमा तारागण के माध्यम से मानव-जीवन में आसन्न प्रकाश का संदेश देते हैं। प्रणयी-हृदय भी शरद ऋतु में रससिक्त हो जाते हैं।

मानव ही नहीं अपितु पक्षी भी इस ऋतु में अपना स्थान परिवर्तित करते हुए देखे गए हैं। खंजन पक्षी जिसे नयनों के उपमान के रूप में मान्यता प्राप्त है, शरद ऋतु में ही अपना स्थान परिवर्तित कर अपने मूल निवास की ओर प्रस्थान करता है और वसंत ऋतु तक वहीं निवास करता है। किसी एक स्थान पर स्थिर होकर न बैठना और क्षण भर में ही उड़ जाना खंजन की मूल प्रकृति है। चंचलता इस पक्षी की प्रमुख विशेषता है। खंजन की इसी चंचलता के कारण ही युवतियों के नयनों की तुलना इस पक्षी से की गई है। शरद ऋतु में खंजन को देखकर अगणित अनुरक्त हृदय अपनी प्रेयसी के मादक नयनों का स्मरण करके भाव-विभोर हो जाते हैं। लोक व्यवहार में खंजन के दर्शन को शुभ माना गया है। इसीलिए देश के हर राज्य, क्षेत्र एवं भू-भाग की लोक संस्कृति में खंजन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जनजातीय समाज की संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों में भी खंजन की उपस्थिति अत्यंत गरिमामय एवं मंगलदायक मानी जाती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार विशेष अवसरों पर खंजन दर्शन होना शुभ शकुन का संदेश है। सभी भाषाओं के साहित्यकारों ने गद्य एवं पद्य साहित्य में खंजन का उल्लेख किया है।



गोस्वामी तुलसीदास ने धार्मिक कृति के रूप में मान्य रामचरितमानस के किष्किंधा कांड में खंजन को पुण्यों के उदय के रूप में चित्रित किया है। किष्किंधा कांड रघुकुल भूषण भगवान राम अपने अनुभ्राता लक्ष्मण से कहते हैं कि सुहावनी शरद ऋतु का प्रारंभ जान कर खंजन पक्षियों का आगमन होने लगा है। खंजन पक्षियों का आना ठीक उसी प्रकार है जैसे उचित समय पाकर हमारे पुण्य साकार हो उठे हों-

जानि सरद रितु खंजन आए,

पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।

शरद ऋतु की अँधेरी रात में महकती हुई रात की रानी और विकसित चंपक पुष्प समस्त भू-मंडल को अपनी शुचिता एवं सुगंध से आप्लावित कर देते हैं। चाहे रात अँधेरी हो अथवा उजियाली, शरद ऋतु की महत्ता कहीं से कम नहीं होती। शरद ऋतु की खिली हुई चाँदनी नेत्रों को एक अनिर्वचनीय शीतलता प्रदान करती है और विरही-जनों के हृदय में मिलन की नई आशा के संचरण का अभिनव संदेश देती है। शरद पूर्णिमा वाले दिन से यह आशा मानों वास्तव में साकार होकर विरही और व्यथित जनों के हृदय में नई चेतना का संचार करते हुए उनके जीवन में अपने प्रणय-पात्र के प्रति नवीन संजीवनी प्रदान करने का कार्य करती है। साहित्य का कल्पना-लोक हो अथवा संसार का यथार्थ-लोक, शरद पूर्णिमा हम सभी के लिए अमरत्व का सुखद संयोजन है। इसीलिए शरद पूर्णिमा वाले दिन पकाकर रात भर चाँदनी में रखी गई खीर अमृत तुल्य मानी गई है। ज्योतिर्विदों के अनुसार संपूर्ण वर्ष में केवल शरद पूर्णिमा वाले दिन चंद्रमा सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है। इसीलिए यह मान्यता है कि शरद पूर्णिमा की रात्रि में चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। शरद पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा और रास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इसी को कोजागर व्रत और कौमुदी व्रत भी कहते हैं। शरद पूर्णिमा की मध्य रात्रि में देवी लक्ष्मी अपने कर-कमलों में वर और अभय लिए संसार में विचरण करती हैं तथ मन ही मन संकल्प करती हैं कि इस समय भूतल पर रात में जागकर मेरी पूजा में लगे हुए प्राणियों को मैं धन-धान्य से पूर्ण कर दूँगी। शरद पूर्णिमा को किया जाने वाला यह कोजागर व्रत देवी लक्ष्मी को संतुष्ट करने वाला है। इस व्रत को करने पर प्रसन्न हुई देवी लक्ष्मी इस लोक में तो समृद्धि देती ही हैं साथ ही शरीर का अंत होने पर परलोक में भी

सद्गति प्रदान करती हैं।

वैसे तो क्वार (आश्विन) और कातिक (कार्तिक) दो महीने शरद ऋतु के माने गए हैं, परंतु प्रत्यक्ष में अगहन (मार्गशीर्ष) मास तक शरद ऋतु का साम्राज्य परिलक्षित होता है। इसका प्रमुख कारण इस ऋतु में बढ़ते हुए शीतकाल का पूस (पौष) में अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त करना है। सदानीरा नदियों के दोनों किनारों पर वायु वेग से झूमते काँस के ऊर्ध्वमुखी श्वेत पुष्पों की श्वेताभा अनायास ही मन मोह लेती है। कल-कल के नाद से गुंजायमान जीवनदायिनी सरिताओं की श्रृंखला को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे वसुधा ने श्वेत चादर ओढ़ ली हो। नीलगगन को आच्छादित किए हुए श्वेतवर्णी मेघों का अलौकिक सौंदर्य अंतर्मन को मुग्ध कर देता है। ऐसे में जलाशयों में जल-क्रीड़ा करते हंसों की पंक्तिबद्ध श्रृंखला की शोभा देखते ही बनती है। वनों-बागों-उद्यानों में खिले हुए मालती के पुष्पों की दृश्यावली अत्यंत नैनाभिराम होती है। पक्षियों का कलरव और पुष्पों का रसपान करते भ्रमरों की रसीली गूंज रसिकों के चित्त को लुभा लेती है। ऐसी शारदीय सुषमा से मंडित सौंदर्यमयी सृष्टि का अवलोकन कर प्रेमीजन अनायास ही अपने चितचोर का स्मरण करने लगते हैं। यह परिदृश्य देखकर तन पुलकित और मन भाव-विभोर हो जाता है। सत्य तो यह है कि शरद ऋतु उल्लास, उमंग, आनंद और सौंदर्य की ऋतु है।

मात्र प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से ही नहीं, अपितु सामान्य स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शरद ऋतु का अपना विशिष्ट महत्व है। आयुर्वेद के प्रसिद्ध विद्वान चरक ऋषि ने स्वास्थ्यवर्धक औषधियों का सेवन करने के लिए यही समय उपयुक्त बताया है। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इस ऋतु में जल, वायु और भोजन शुद्ध एवं स्वच्छ रूप में प्राप्त होते हैं जो मानव को शक्ति तथा स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं। इसीलिए शरद ऋतु में मनुष्य के शरीर की पाचन क्षमता एवं तदजन्य प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने से भूख बहुत लगती है, लेकिन इस ऋतु की विशेषता यह है कि किसी भी खाद्य पदार्थ का सेवन के बाद उसका पाचन सरलता के साथ हो जाता है। इसीलिए इस ऋतु को शक्ति संचय का काल कहा गया है।

शरद ऋतु में ही गन्ने की फसल तैयार होती है और गुड़ का उत्पादन प्रारंभ हो जाता है। गाँवों में लगे कोल्हू एवं नगरों-महानगरों की चीनी मिलों में गन्नों की पेराई की शुरुआत इसी समय होती है। गन्ना, गन्ने के ताजे रस एवं गुड़ के सेवन करने से शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा की प्राप्ति होती है। इसी ऋतु में गन्ने के रस से सिरका बनाया जाता है। सिरका में कच्चे आम भी डाले जाते हैं। सिरका में पड़ा कच्चा आम पाचन क्रिया को सरल और सुगम बनाने में बहुत सहायक है। यह सिरका पाचन शक्ति को मजबूत करने के लिए एवं पेट में उत्पन्न होने वाली फीताकृमि को नष्ट करने के लिए रामबाण है। सिरका मिश्रित सत्तू खाने से भी पेट के विकारों से मुक्ति मिलती है। आयुर्वेद में भी इस ऋतु में गुड़, तिल और तिल से बने खाद्य पदार्थ, ज्वार एवं बाजरा का पर्याप्त मात्रा में सेवन करने की सलाह दी गई है। इसके साथ ही साथ घी, दूध एवं दुग्ध पदार्थ, काली मिर्च, अदरक, जीरा, हल्दी भी शरीर में कैल्शियम, आयरन और वसा की मात्रा बढ़ाने में सहायक बताए गए हैं। आँवला, नारंगी, मोसम्बी आदि फल और बादाम, अखरोट, खुमानी, खजूर एवं अन्य मेवों का इस ऋतु में सेवन भी कांति एवं बलवर्धक कहा गया है।

इस प्रकार जनमानस को आह्लादित करने वाली, वसुधा पर नवचेतना को बिखेरने वाली और वर्षा से श्लथ हुई प्रकृति को पुनः क्रियाशील करने वाली, साथ ही रसिकजनों के मन में नूतन आशा का संचार करने वाली शरद ऋतु भू-मंडल पर विहार करती है। इस ऋतु में प्रकृति के साथ-साथ धरती पुत्र मानव स्वस्थ और कांतिमय होकर जीवन के क्रियाकलापों में गतिशील होकर मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होता है। वास्तविकता तो यह है कि शरद ऋतु जीवनदायिनी है। प्रकृति के हरे-भरे पेड़-पौधों से लेकर मानव और मानवेतर प्राणियों के लिए यह शीतलता, मादकता एवं संजीवनी प्रदान करती है।

सदस्य, मंडल रेल उपयोगकर्ता
परामर्शदात्री समिति (डी.आर.यू.सी.सी.)
उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज मंडल

शांति की खोज में



- ओम प्रकाश मिश्र

मानव जाति के इतिहास में, शांति की खोज शाश्वत है। व्यष्टिगत एवं समष्टिगत दोनों स्तरों पर यह स्थायी आवश्यकता रही है। व्यक्तिगत स्तर पर शांति की तलाश परिवार, समाज, देश, दुनिया से कुछ अलग सा सोचकर भी होती रही है। जंगलों-गुफाओं, पर्वतों की कंदराओं में भी व्यक्ति शांति खोजने जाता रहा है। परंतु सुख एवं शांति अक्सर साथ-साथ नहीं चलते हैं। सुख का अर्थ, सामान्यतः लोग भौतिक सुखों से समझते हैं। सुख-शांति एक साथ रहने वाले होते तो सुख (अधिकांशतः भौतिक सुखों) की तलाश में न तो सुख मिल पाता है और शांति मिलने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। सुख की तलाश भौतिकता/लालच/संग्रह/लोभ/कामनाओं की जनक होती है, जबकि शांति की तलाश के लक्ष्य एकदम अलग होते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर शांति जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक समाज, देश एवं अखिल विश्व के स्तर पर भी है। यह अनुभूति लगातार होते रहने के बावजूद द्वंद्व प्रत्एक स्तर पर होते रहे हैं।

आज समस्त संसार में अशांति का वातावरण व्याप्त है। अमेरिका, चीन, रूस सरीखी बड़ी सैन्य शक्तियाँ तथा कुछ अन्य देशों के परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, मिसाइलों, अंतर्महाद्वीपीय बैलेस्टिक मिसाइलों, घातक पनडुब्बियों, जंगी जहाजों, सुपर सोनिक जेट तथा भाँति-भाँति के रासायनिक एवं बायोलॉजिकल अस्त्रों से मानवता को खतरा बढ़ता जा रहा है।

अभी हाल में हमास एवं इसराइल के बीच हुआ ग्यारह दिनों का यह युद्ध आँख खोलने वाला है। वर्ष 2014 के बाद, पहली बार फिलीस्तीन और इजराइल के बीच ऐसा भीषण संघर्ष देखने को मिला है। इस संघर्ष में ढाई सौ से अधिक लोगों के मारे जाने एवं हजारों लोगों के घायल होने का समाचार है।

फिलीस्तीनी आतंकी संगठन हमास ने इजराइल पर सैकड़ों राकेट दागे थे, फिर इजरायल ने भीषण हवाई हमलों से हमास तथा नागरिकों को भारी नुकसान पहुँचाया। यह एक महायुद्ध का ट्रेलर मात्र था। दोनों के बीच संघर्ष, वैश्विक आतंकवादी संगठनों, विश्व के वर्तमान देशों में विद्यमान लोकतांत्रिक देशों के लिए नहीं वरन समस्त विश्व के लिए एक संदेश देता है कि संघर्ष किसी भी समस्या का समाधान नहीं है।

इजराइल, संसार के यहूदी धर्मावलंबियों के प्राचीन राष्ट्र का नया रूप है। इजरायल एक देश के रूप में 1948 में अस्तित्व में आया। इजरायल प्राचीन फिलीस्तीन का ही बृहद रूप है। 1967 के स्वेज नहर में आवाजाही को लेकर हुए युद्ध में, इजरायल ने मिस्र, सीरिया, जार्डन आदि देशों की बुरी तरह पराजित किया तथा उनके कई भूभागों पर कब्जा कर लिया। इजरायल भौगोलिक क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से छोटा सा देश है, परंतु सैन्य शक्ति की दृष्टि से अत्यधिक सशक्त राष्ट्र है। दुनिया भर के यहूदी, इजरायल को आर्थिक सहयोग देते हैं। विशेषतः अमेरिका का खुला समर्थन इजरायल को लगातार मिला है। बहुत समय से फिलीस्तीन एक संघर्ष एवं तनाव का केंद्र रहा है। उस क्षेत्र में आतंकवादी संगठनों की शक्ति वर्षों से रही है, पर वहाँ की आम जनता पीड़ित ही रही है। कई बार मानवता की दृष्टि से फिलीस्तीन के आम नागरिकों को जो झेलना पड़ा है; वह दुखद हैं। किंतु आतंक को प्रश्रय देने का दंड, राज सत्ताओं के साथ-साथ, आम जनता को भी सहना पड़ता है। यानी गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है। धार्मिक आधार पर विभाजनों एवं लड़ाइयों ने मानवता को सदैव कुचला है।

सारे संसार में, विभिन्न क्षेत्रों में, समय-समय पर हुए युद्धों में, मानवता का कत्लेआम होता रहा है। लगातार दिल दहलाने वाली घटनों तथा उनके हृदय विदारक दृश्य मानव समाज को आतंकित करते रहते हैं। युद्धों में, आमजनता को अपना घर छोड़कर पलायन करना पड़ता है, पलायन एवं

विस्थापन का शिकार होना पडता है। हत्यों, बलात्कार एवं यातनों, युद्धों की अनिवार्य परिणति होती हैं। आम जनता पर भारी हथियारों का प्रयोग किया जाना युद्धों का नियम सा बन गया है।

युद्धों के परिणाम से समुदायों को छिन्न-भिन्न होते देखा गया है। युद्धों का निर्णय, राजसत्तों करती हैं। अनेक बार उनका दंभ, अंध राष्ट्रवाद का भाव, दूसरे देशों की जमीन हड़पने का लक्ष्य युद्धों को आरंभ कराती हैं। जमीन हड़पने का लक्ष्य, मानवता का सर्वनाश करते हुए दिखाई पड़ता है। सच्चाई तो यह है कि वर्तमान काल में युद्धों में शायद ही किसी को स्पष्ट जीत दिखाई पड़ती है आर-पार की स्थिति तो आती नहीं और युद्धों में एक पक्ष स्पष्टतः जीत नहीं पाता, परंतु दोनों पक्षों को ही नहीं, वरन् आम आदमी का ही सर्वनाश करता है। यही युद्धों की नियति होती है।

संसार में यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि मध्यकाल से ही सभी युद्धों का परिणाम महिलाओं के लिए अत्यंत दुखदायी होता रहा है। बलात्कार, बलातदासी बनाने के भी एवं हरम की वस्तु बनाने के उदाहरण, खासकर मध्यकाल में रहे हैं। आज भी युद्धों में महिलाओं का शोषण होता ही है। यह अत्यंत निंदनीय है। युद्धों का आरंभ, राज सत्तों करती हैं, मरने वालों में आम जनता, सैनिक सभी होते हैं। किसी भी उच्चवर्ग के परिवार से सेना में जाने की परंपरा लगभग शून्य ही है। पहले राजस्थान के कुछ राजाओं के परिवारजन भी सेना में अधिकारी बनते थे, वह परंपरा भी अब क्षीण हो चुकी है। ज्यादातर सेना में वही युवक आते हैं, जो निम्न मध्यम वर्ग से आते है, उच्च वर्ग के लोग आजकल अपने बच्चों को सेना में नहीं भेजते क्योंकि सेना का जीवन कठिन है तथा वेतन भी कम है। भारत में बड़े राजनेताओं के परिवार से सामान्यतः कोई सेना में कार्यरत दिखाई नहीं पड़ता है। सेना में केवल गरीबों, निम्न मध्यम वर्ग के परिवारों से ही आते हैं।

आजकल युद्ध की प्रकृति भी बदल गई है। छद्म युद्ध भी, युद्ध ही हैं। आतंकवाद की घटनों भी छद्म युद्ध ही है। मुंबई हमला जैसी आतंकवादी घटनों भी युद्ध जैसा ही है।

युद्धों से मजदूरों, गरीबों, महिलाओं, बच्चों आदि का सर्वाधिक सर्वनाश होता है। युद्धों में जीत किसी की नहीं होती है, बल्कि दोनों पक्षों को उनके गरीबों, मजदूरों, बच्चों एवं महिलाओं का सर्वनाश ही देखना पड़ता है।

राजाओं, बादशाहों, विदेशी आक्रांताओं एवं वर्तमान काल के अभिजात्य राजसत्ताओं के दंभ में कोई अंतर नहीं है। अगर आगे कोई विश्वयुद्ध होगा तो उसका परिणाम कितना भयानक होगा, उसका ट्रेलर हिरोशिमा एवं नागासाकी की जनता के रूप में देखा जा सकता है। इस संभावित विश्व युद्ध के बाद यदि मानवजाति बचेगी भी तो वह अगली लड़ाई पत्थरों से कर सकेगी। यह गंभीर चिंतन का विषय है।

अब युद्धों की प्रकृति के आयाम भी बढ़ रहे हैं। पहले केवल सामरिक संघर्ष होते थे, फिर आर्थिक संघर्ष प्रबलता से होते हुए, दिखाई पड़ते रहे हैं। पहले सभ्यताओं के बीच संघर्ष, जमीन हड़पने के लिए ही होते थे, परंतु अब सभ्यता एवं संस्कृति केंद्रित संघर्ष भी बढ़ रहे हैं। बहुत बार तो जमीन हड़पने का ही एकमात्र लक्ष्य नहीं होता। दुर्भाग्य से सभ्यताओं, संस्कृतियों एवं कभी-कभी धर्म का भी आधार बनाकर युद्ध थोपे गए हैं, परंतु युद्धों का खेल महाशक्तियों द्वारा ही संचालित होता रहा है। यह सच है कि सद्दाम हुसैन, खाड़ी युद्ध (गल्फ वार) में जिन हथियारों के आधार पर पश्चिम से लड़े थे, वे हथियार ज्यादातर पश्चिम से ही आए थे।

सभ्यताओं, संस्कृतियों एवं धर्म आधारित युद्ध, रक्तरंजित हुए हैं, परंतु कही से पीछे महाशक्तियों की कुटिल नीतियाँ ही रही है। सभ्यताओं में अहंकार होता हैं। इसलिए परस्पर द्वंद्व हो सकता है, परंतु युद्ध कराने में महाशक्तियों का हाथ अवश्य रहता है। रक्त-पिपासु शत्रु समान सभ्यताओं को भड़काने वाले तथा पीछे से हाथ रखकर युद्ध कराने वाले बड़े देश होते हैं, जो हथियार की आपूर्ति करते हैं। बड़ी शक्तियों का संयुक्त राष्ट्र-संघ एक दिखावटी विश्व-संसद होकर रह गया है। वस्तुतः इसकी ताकतवर संस्था सुरक्षा परिषद है। इसके पाँच स्थायी सदस्यों- चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन एवं अमेरिका को किसी

भी फैसले के विरूद्ध विशेषाधिकार (वीटो) की शक्ति प्राप्त है। यह वीटो ही विश्व भर के बहुत सारे द्वंद्वों-संघर्षों एवं युद्धों का कारण है। इन पाँच महाशक्तियों ने अपनी-अपनी बारी से विश्वबंधुत्व को पलीता लगाया है।

जब दुनिया के सारे देश समान हैं, तो फिर वीटो का क्या औचित्य है। समझ में नहीं आता कि वीटो की आवश्यकता क्या विश्व की ठेकेदारी करने के लिए है? आवश्यकता तो इस बात की है कि उदात्त मानवीय मूल्यों पर आधारित विश्व संस्कृति का निर्माण किया जाए। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा सुरक्षा परिषद, इस लक्ष्य या आदर्श के लिए पूर्णतः असफल सिद्ध हुए हैं। समस्या की जड़, वीटो की ताकत की आड़ में दादागिरी कायम रखने की है। वस्तुतः विश्व समुदाय में दादागिरी की प्रवृत्ति के बीज कई देशों में हिंसात्मक तरीके की तथाकथित क्रांतियों के बल पर पाई गई स्वतंत्रता में भी विद्यमान है। चीन में माओत्सेतुंग ने कुछ हजार लोगों एवं कुछ सौ बंदूकों से 1926 में गतिविधियाँ शुरू की और 1949 तक वे चीन के अधिपति बन बैठे। वहीं तुलनात्मक रूप से मोटे तौर पर भारत का स्वाधीनता संग्राम, शांतिपूर्ण ही माना जाता है। यद्यपि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन से आरंभ हुई ज्वाला को बीच-बीच में सरदार भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद से लेकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा नौसेना विद्रोह के योगदान ने भी महत्वपूर्ण बल प्रदान किया था। यद्यपि भारत की स्वतंत्रता के समय सांप्रदायिक हिंसा बहुत बड़े पैमाने पर हुई थी।

रूस का साहित्य भी एक हजार वर्ष का खून-खराबा, युद्ध, अत्याचार और कूरता को दर्शाता है। जारशाही के अंतिम वर्षों में कूरता एवं निरंकुशता ही रही। लेनिन ने चिनगारियों को लपटों में बदल दिया। रक्तरंजित क्रांतियों ने रूस और चीन में सामाजिक, राजनैतिक एवं शासनतंत्र पर पूरा-पूरा कब्जा कर लिया था। भारत में तुलनात्मक रूप से शांतिपूर्ण स्वतंत्रता आन्दोलन का परिणाम, भारत के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना के रूप में हुई। भारत में लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हैं।

भारतीय धर्म, दर्शन तथा नैतिकता की अधिकांश मौलिक कल्पनाओं का विकास और प्रतिपादन, पाश्चात्य देशों की तुलना में बहुत पहले से ही हुआ है। विशाल आबादी, समृद्ध प्राकृतिक संसाधन एवं लोकतांत्रिक मूल्यों पर आस्था, भारत की मूल शक्ति है। हमारा मानना है कि मात्र आकार-विस्तार एवं भूमि विस्तार से कोई देश या राष्ट्र महान नहीं बनता है।

इतिहास हमें बताता है कि युद्ध की समस्या को हल करने के लिए देशों ने कई और युद्ध जबरन थोपे। शक्ति संतुलन साधने के लिए शीतयुद्ध के कालखंड में घातक हथियारों की अंधी दौड़ चलती रही है। अरस्तू ने प्राचीन यूनान के बारे में कहा था कि हमारे समाज में सर्वदा दो प्रकार के नगर होते हैं- एक तो अमीरों का नगर और दूसरा गरीबों का। आजकल यह विभाजन पूरे संसार में दिखलाई पड़ता है। इस प्रकार के विभाजन सभी समाजों में सभी कालखंडों में कमोवेश किसी न किसी रूप में रहते ही रहे हैं। परंतु भारत में त्यागपूर्ण भोग 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' का सिद्धांत आदि काल से ही प्रभावी रहा है। त्यागपूर्ण भोग, संतोष तथा दान की महिमा, भारतीय जीवन मूल्यों का आधार है। संसार में भौतिकवाद लगातार बढ़ रहा है, शांति लेशमात्र भी दृष्टिगोचर नहीं होती है। जब तक दर्शन शास्त्रों के श्रवण-मनन होते थे, तब देश में सुख एवं शांति थी। आज संसार में रागद्वेष, अशांति एवं दुख व्याप्त है। दरअसल वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण जैसी अवधारणाएं भारत के लिए नवीन विचार नहीं हैं। विश्व के प्राचीनतम ज्ञानकोष ऋग्वेद में प्रार्थना है, हे परम प्रकाशक परमात्मा। सद्विचार सभी दिशाओं (समूचे विश्व) से हम पर आए। हम 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा पर विश्वास करते हैं। हम विश्व को परिवार मानते हैं, बाजार नहीं।

मनुष्य स्वाभाविक रूप से हिंसा पसंद नहीं करता, परंतु कई देशों में देखा गया है कि नया सत्ताधीश, पहले वाले की तुलना में कहीं ज्यादा रक्त पिपासु हुआ है। कई देशों में ताकत ही सत्ता का चरित्र मानी जाती है। यद्यपि आदर्श अवस्था तो असहमति का आदर करना ही है। भारत में कबीर जैसे साधकों ने बहुत पहले ही निंदक को आँगन में घर बनवाकर सम्मान देने के लिए उपदेश दिए थे। आज विश्व में हर एक व्यक्ति के मन में दूसरे व्यक्ति के प्रति भातृभाव का विचार उत्पन्न कराना आवश्यक है। मनुष्य जैसा भी है, परमात्मा का ही विस्तार है; जो मनुष्य सहमत हैं वे भी तथा वे भी जो असहमत हैं।

हमें भगवान बुद्ध, महावीर, आदिशंकराचार्य, सुकरात की तरह सहमति तथा असहमति के मध्य विचार-विमर्श की परंपरा को विस्तार देना चाहिए।

आजकल विश्व में 'शक्तिः परेषां परपीडनाय' का सिद्धांत ही ज्यादा प्रचलन में है। संसार के कई क्षेत्रों से शांति-शांति की आवाज बुलंद होनी चाहिए। मानव-संहारक अस्त्रों के प्रयोग की खुली छूट का परिणाम क्या होगा? इसकी कल्पना ही दहशत पैदा करती है। भारत में तो शांति के लिए अनेक महापुरुषों ने अपना सारा जीवन लगा दिया था। नागरिकों की उदात्त गुण संपदा का उपयोग, रचनात्मक कार्यों में हो, विध्वंसक कार्यों में न हो, ऐसी हमारी मान्यता रही है। भारतीय संस्कृति की परंपरा, समस्त विश्व, सारी पृथ्वी तथा समस्त ब्रह्मांड में शांति की पक्षधर रही है। यजुर्वेद में कहा गया है-

''ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षं शांतिः,
पृथ्वी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांति ।
वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः,
सर्व शांतिः, शांतिरेव शांतिः, सा मा शांतिरेधि ।।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।।''

-यजुर्वेद (अध्याय 36, श्लोक 17)

उक्त श्लोक का भाव यह है कि - 'हे जगत के परम सत्ता, परं ब्रह्म परमेश्वर, शांति स्थापना करें, तीनों लोकों में, जल में, धरती में और आकाश में, अंतरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि में, वनस्पति, वन में, उपवन में, संपूर्ण विश्व में अवचेतन में शांति करें। जीवमात्र के हृदय में, मुझमें, तुममें शांति हो। जगत के कण-कण में शांति ही शांति हो। विचार करने की बात यह है, आज से हजारों वर्ष पहले हमारे ऋषियों-मनीषियों ने जिस प्रकार से सारे विश्व, प्रकृति, वनस्पतियों आदि सभी की शांति की कामना की थी। अस्तु, समस्त विश्व में व्यष्टिगत एवं समष्टिगत दोनों ही स्तरों पर भारतीय परंपरा का अनुसरण ही वरेण्य है।

सेवानिवृत्त मुख्य कार्मिक अधिकारी
उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज

वीरों की पहचान



- सी.एल. वर्मा

शत शत नमन शहीदों को
जो वीरगति को प्राप्त हुए।
हँसते-हँसते वो चढ़ गए फाँसी,
हम गुलामी से आजाद हुए।
कर्ज बहुत उनका हम पर,
ऋण मुक्त नहीं हो सकते हैं।
वो आज हमारे बीच नहीं,
तिरंगे में अब भी जीवित हैं।
सोचो वो दृश्य क्या होगा,
जब झूले होंगे फाँसी पर।
फंदा भी डर से काँपा होगा,
ऐसे वीरों की हिम्मत पर।
खैरात नहीं बलिदान है,
शौर्य और स्वाभिमान है।
लहराता ध्वज भारत का,
वीरों की पहचान है।
जय हिंद, जय भारत।

सेवानिवृत्त मुख्य कार्यालय अधीक्षक
उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज।

सब बिधि सोचिअ पर अपकारी



-पं. रामनरेश तिवारी 'पिंडीवासा'

गोस्वामी तुलसी द्वारा प्रणीत महाकाव्य रामचरितमानस एक ऐसा अनूठा ग्रंथ है, जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग को मार्गदर्शन और प्रत्येक समस्याओं का समाधान प्राप्त होता है। इस असार संसार में मनुष्य मायाजन्य विडंबनाओं में उलझकर अपने अस्तिव को भूल जाता है। मानव मूल्यों का विस्मरण कर पथभ्रष्ट हो जाता है। आज के वैज्ञानिक युग में तो मनुष्य अपने को सर्वसमर्थ मान बैठा है, जबकि उसका प्रत्येक उपक्रम उस परमसत्ता के अधीन है। इस सत्य से विचलित मानव धीरे-धीरे माया-मोह वश जीवन के अमूल्य क्षणों को निष्फल व्यतीत कर जाता है। गोस्वामी जी एक ओर जहाँ संत शिरोमणि थे, वहीं शास्त्रवेता सिद्धहस्त महाकवि के साथ समाज के उन्नायक और सुधारक भी थे। उनकी सृजनशीलता ने तत्कालीन समाज को एक अभिनव मार्ग प्रशस्त कर जीवन धन्य करने का सुअवसर प्रदान किया।

अयोध्याकांड के अंतर्गत राम के चौदह वर्ष वनवास हेतु चले जाने पर महाराज दशरथ के गोलोकवास के बाद ननिहाल से वापस आए भरत-शत्रुघ्न के शोकग्रस्त होने के कारण गुरु वशिष्ठ ने उन्हें ज्ञानवर्धक उपदेश देकर बहुत समझाया और दशरथ जी के प्रति चिंतित भरत को चिंतारहित करने का प्रयास किया। गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं –

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु विधि हाथ।।

इसी प्रसंग में भरत को निश्चिंत करने की भावना से गुरु वशिष्ठ ने समाज के विभिन्न वर्गों की शोचनीय स्थिति का उल्लेख किया है। उनके मतानुसार समाज में अध्यांकित व्यक्तियों की मनोदशा चिंतनीय होती है। इस संदर्भ का वर्णन गोस्वामी जी ने अयोध्याकांड के 172 एवं 173 दोहे के अंतर्गत इस प्रकार व्यक्त किया है।

सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना
तजि निज धरमु बिषय लयलीना।
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना,
जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।।

अर्थात वह ब्राह्मण शोचनीय है जिसे वेद का ज्ञान न हो। वेद विहीन होकर वैदिक परंपराओं से विरत ब्राह्मण जो अपने सनातन धर्म का परित्याग कर विषय भोग में ही लीन रहता हो, वह सोच करने योग्य है, साथ ही वह राजा जिसमें नीति निपुणता न हो अर्थात जो राजा नीतिज्ञ न हो और जिसे अपनी प्रजा प्राणों के समान प्यारी न हो वह शोच्य है। यहाँ मानस का यह संदर्भ प्रासंगिक और जीवंत हो उठता है कि इनकी दशा शोचनीय है-

सोचिअ बयसु कृपन धनवानू,
जो न अतिथि सिव भगति सुजानू।

अर्थात उस वैश्य को सोच करना चाहिए जो धनवान होकर भी कंजूस है और जो अतिथि सत्कार तथा शिव भक्ति करने में कुशल नहीं है। यहाँ वैश्य का आशय वर्तमान पूँजीपतियों तथा धनवानों से भी है। जो धनवान संग्रह करके निर्धनों, असहायों के प्रति उदार न हो अथवा अतिथियों की सेवा में जिसकी रुचि न हो और जो श्रद्धा भक्तिपूर्वक अपने धन को धार्मिक कृत्यों में न व्यय करता हो, वह मानस के अनुसार निंदनीय एवं शोचनीय है।

सोचिअ पुनि पति बंचक नारी।
कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी
सोचिअ बहु निज ब्रतु परिहरई,
जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई।

पुनः उस स्त्री को सोच करना चाहिए जो पति को छलने वाली, कुटिल, कलहप्रिय, स्वेच्छाचारिणी है अर्थात पतिव्रता स्त्री कदापि शोच्य नहीं है। इसके विपरीत जो नारियाँ अपने पति से छल-प्रपंच कर परपुरुषगामिनी, कलह करने वाली और कुटिल स्वभाव की होती हैं, वही

समाज में निंदनीय तथा शोचनीय हैं। उस ब्रह्मचारी को भी शोचनीय अवस्था में मानना चाहिए, जो अपने ब्रह्मचर्य व्रत का परित्याग कर देता है तथा अपने गुरु की आज्ञा का पालन न कर स्वेच्छाचार करता है। ऐसा वटु (ब्रह्मचारी) सर्वथा चिंतनीय है।

सोचिअ गृही जो मोहबस, करइ करम पथ त्याग।

सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग।।

यहाँ पर वशिष्ठ जी ने आगम पद्धति के विविध सोपानों में शोच्य व्यक्तियों का संकेत किया है। गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाला वह गृहस्थ सोच का भागी होता है, जो मोहग्रस्त होकर कर्ममार्ग का त्याग कर देता है। इसी प्रकार उस संन्यासी को सोच करना चाहिए जो जागतिक प्रयत्नों में उलझा हुआ है और ज्ञान-वैराग्य से हीन हो गया है। ऐसे गृहस्थ एवं संन्यासी निश्चित रूप से चिंतनीय अथवा सोच के विषय बन जाते हैं।

बैखानस सोई सोचै जोगू,

तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू।

सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी,

जननि जनक गुर बंधु बिरोधी।।

वही वानप्रस्थी सोच करने योग्य है, जिसका मन तपस्या में नहीं लगता, अपितु उनकी भोग विलास में आसक्ति रहती है। आजकल यह देखा जाता है कि समाज में ऐसे व्यक्तियों का बाहुल्य है जो सदैव चुगलखोरी और चापलूसी में संलिप्त रहते हैं। उनमें अकारण ही क्रोध फूट पड़ता है तथा माता-पिता, श्रेष्ठजनों अथवा भाई-बंधुओं से विरोध-भाव बनाए रखते हैं। समाज के ऐसे तत्व निंदनीय तो हैं ही, सोचनीय भी हैं।

सब बिधि सोचिअ पर अपकारी,

निज तनु पोषक निरदय भारी।

सोचनीय सबहीं बिधि सोई,

जो न छाड़ि छलु हरि जन होई।।

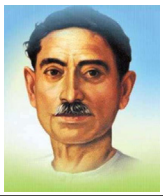
अंततः गोस्वामी जी लिखते हैं कि सब प्रकार से उसका सोच करना चाहिए, जो दूसरों का सदैव अनिष्ट चिंतन करता है अर्थात जो व्यक्ति परोपकारी न होकर अपकारी हो जाता है, वह चिंतन करने योग्य बन जाता है, साथ ही जो केवल अपने ही शरीर का पोषण करने वाला और अत्यंत निर्मम स्वभाव का व्यक्ति हो, वह भी सोच का पात्र है। जो व्यक्ति छल-प्रपंच छोड़कर भगवान की भक्ति नहीं करता, जिसका मन विशुद्ध नहीं होता और छल कपटों में ही लगा रहता है और भक्ति का अंकुरण नहीं होता, वह व्यक्ति सबसे अधिक सोच करने योग्य है।

इस प्रकार निष्कर्ष यह है कि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास महराज ने समाज के विविध पक्षों का संदर्भ उजागर करते हुए यह सुस्पष्ट कर दिया है कि कौन-कौन व्यक्ति समाज में सोच के मूल तत्व हैं। वर्तमान समाज के परिप्रेक्ष्य में ये सारे नीतिगत सिद्धांत सर्वथा प्रासंगिक एवं उपादेय हैं। समाज के उन सभी घटकों को इन सूत्रों पर ध्यान देकर अपने में सुधार करने की आवश्यकता है। इन सूत्र संदर्भों का महत्व आज भी समाज के लिए अनुकरणीय एवं समीक्षा करने योग्य है। चाहे वह राजा हो अथवा प्रजा, गृहस्थ हो अथवा संन्यासी, ब्रह्मचारी हो अथवा वानप्रस्थ या समाज का कोई भी व्यक्ति हो, यदि उसमें सद्गुण अथवा वैशिष्ट्य विद्यमान नहीं है तो वह सोच करने के योग्य है।

संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास महराज ने रामचरितमानस की रचना कर समाज में घटित विविध घटनाओं का विस्तृत वर्णन करते हुए भरत जी को 'भावी प्रबल' होती है अर्थात जब जो होना है, अवश्य ही होगा, यही समझाया है। वर्तमान में समाज में जो विविध घटनाएं घटित हो रही हैं, उसके मूल कारण को रेखांकित किया गया। समाज के अंदर व्याप्त बुराइयाँ तथा उनके निर्धारण का विविध रूपों में समाज के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करते हुए बहुत ही सुंदर ढंग से व्यापक वर्णन किया गया है। अस्तु, जन कल्याण एवं राष्ट्रहित के लिए सामाजिक संतुलन परम आवश्यक है जिस पर प्रत्येक भारतवासी को विवेकपूर्वक चिंतन करना ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के लिए कल्याणप्रद होगा।

नगर प्रधान, केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद
एवं सदस्य जेडआरयूसीसी,
उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज

बेटी का धन



- प्रेमचंद

बेतवा नदी दो कगारों के बीच इस तरह मुँह छिपाए हुई थी,जैसे निर्मल हृदयों में सरस और उत्साह की मध्यम ज्योति छिपी रहती है। इसके एक कगार पर एक छोटा-सा गाँव बसा है, जो अपने भग्न जातीय चिह्नों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। जातीय गाथाओं और चिह्नों पर मर मिटने वाले लोग इस भग्न स्थान पर बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ आते और गाँव का बूढ़ा केवल सुक्खू चौधरी उन्हें उसकी परिक्रमा कराता और रानी के महल, राजा का दरबार और कुँवर के बैठके के मिटे हुए चिह्नों को दिखाता। वह एक उच्छवास लेकर रुँधे हुए गले से कहता-'महाशय'! एक वह समय था कि केवटों को मछलियों के इनाम में अशर्फियाँ मिलती थीं। कहार महल में झाड़ू देते हुए अशर्फियाँ बटोर ले सकते थे। वेतवा नदी रोज बढ़कर महाराज के चरण छूने आती थी। यह प्रताप और यह तेज था, परंतु आज इसकी यह दशा है।' इन सुंदर उक्तियों पर किसी का विश्वास जमाना चौधरी के वश की बात न थी, पर सुनने वाले उसकी सहृदयता तथा अनुराग के जरूर कायल हो जाते थे।

सुक्खू चौधरी उदार पुरुष थे, परंतु जितना बड़ा मुँह था, उतना बड़ा ग्रास न था। तीन लड़के, तीन बहुएं और कई पौत्र-पौत्रियाँ थीं। लड़की केवल एक गंगाजली थी, जिसका अभी तक गौना नहीं हुआ था। चौधरी की यह सबसे पिछली संतान थी। स्त्री के मर जाने पर उसने इसको बकरी का दूध पिला-पिलाकर पाला था। परिवार में खानेवाले तो इतने थे, पर खेती सिर्फ एक हल की होती थी। ज्यों-त्यों कर निर्वाह होता था, परंतु सुक्खू की वृद्धावस्था और पुरातत्व-ज्ञान ने उसे गाँव में वह मान प्रतिष्ठा प्रदान कर रक्खी थी, जिसे देखकर झगड़ू साहू भीतर-ही-भीतर जलते थे। सुक्खू जब गाँववालों के समक्ष हाकिमों से हाथ फेंक-फेंककर बातें करने लगता और खंडहरों को घुमा-फिराकर दिखाने लगता था,तो झगड़ू साहू, जो चपरासियों के धक्के खाने के डर से करीब नहीं फटकते थे, तड़प-तड़प कर रह जाते थे। अतः वे सदा उस शुभ अवसर की प्रतीक्षा करते रहते थे, जब सुक्खू पर अपने धन द्वारा प्रभुत्व जमा सकें।

इस गाँव के जमींदार ठाकुर जीतनसिंह थे, जिनकी बेगार के मारे गाँववालों के नाकों में दम था। उस साल जब जिला मजिस्ट्रेट का दौरा हुआ और वह यहाँ के पुरातन चिह्नों की सैर करने के लिए पधारे, तो सुक्खू चौधरी ने दबी जबान से अपने गाँववालों की दुःख कहानी उन्हें सुनाई। हाकिमों से वार्तालाप करने में उसे तनिक भी भय न होता था। सुक्खू चौधरी को खूब मालूम था कि जीतनसिंह से रार मचाना सिंह के मुँह में सिर देना है। किंतु जब गाँववाले कहते थे कि चौधरी तुम्हारी यह मित्रता किस दिन काम आएगी! 'परोपकाराय सताम् विभूतयः!' तब सुक्खू का मिजाज आसमान पर चढ़ जाता था। घड़ी-भर के लिए वह जीतनसिंह को भूल जाता था। मजिस्ट्रेट ने जीतनसिंह से इसका उत्तर माँगा। उधर झगड़ू साहू ने चौधरी के इस साहसपूर्ण स्वामी-द्रोह की रिपोर्ट जीतनसिंह को दी। ठाकुर साहब जलकर आग हो गए। अपने करिंदे से बकाया लगान की बही माँगी। संयोगवश चौधरी के जिम्मे इस साल का कुछ लगान बाकी था। कुछ तो पैदावार कम हुई, उस पर गंगाजली का ब्याह करना पड़ा। छोटी बहू नथ की रट लगाए हुए थी, वह बनवानी पड़ी। इन सब खर्चों ने हाथ बिलकुल खाली कर दिया था। लगान के लिए कुछ अधिक चिंता नहीं थी। वह इस अभिमान में भूला हुआ था कि जिस जबान में हाकिमों को प्रसन्न करने की शक्ति है। क्या वह ठाकुर को अपना लक्ष्य न बना सकेगी? बूढ़े चौधरी इधर तो अपने गर्व में निश्चिंत थे और उधर उन पर बकाया लगान की नालिश ठुक गई सम्मन आ पहुँचा। दूसरे दिन पेशी की तारीख पड़ गई चौधरी को अपना जादू चलाने का अवसर न मिला।

जिन लोगों के बढ़ावे में आकर सुक्खू ने ठाकुर से

छेड़छाड़ की थी, उनका दर्शन मिलना दुर्लभ हो गया। ठाकुर साहब के सहने और प्यादे गाँव में चील की तरह मँडराने लगे। उनके भय से किसी को चौधरी की परछाईं काटने का साहस न होता था। कचहरी यहाँ से तीन मील पर थी। बरसात के दिन, रास्ते में ठौर-ठौर पानी और उमड़ी हुई नदियाँ, रास्ता कच्चा, बैलगाड़ी का निबाह नहीं, पैरों में बल नहीं, अतः अदमपैरवी में मुकदमा एकतरफा फैसला हो गया।

कुर्की का नोटिस पहुँचा, तो चौधरी के हाथ-पाँव फूल गए। सारी चतुराई भूल गई। चुपचाप अपनी खाट पर पड़ा-पड़ा नदी की ओर ताकता और मन में कहता- क्या मेरे जीते ही जी घर मिट्टी में मिल जाएगा? मेरे इन बैलों की सुंदर जोड़ी के गले में आह! क्या दूसरों का जुआ पड़ेगा? यह सोचते-सोचते उसकी आँख भर आती। वह बैलों से लिपट कर रोने लगता, परंतु बैलों की आँखों में क्यों आँसू जारी थे! वे नाँद में मुँह क्यों नहीं डालते! क्या उनके हृदय पर भी अपने स्वामी के दुःख की चोट पहुँच रही थी?

फिर वह अपने झोपड़े को विकल नयनों से निहारकर देखता और मन में सोचता- क्या हमको इस घर से निकलना पड़ेगा? यह पूर्वजों की निशानी क्या हमारे जीते-जी छिन जाएगी?

कुछ लोग परीक्षा में दृढ़ रहते हैं और कुछ लोग इसकी हलकी सी आँच भी नहीं सह सकते। चौधरी अपनी खाट पर उदास पड़े-पड़े घंटों अपने कुलदेव महावीर और महादेव को मनाया करता और उनका गुणगान गाया करता। उसकी चिंता दग्ध आत्मा को और कोई सहारा न था। इसमें कोई संदेह न था कि चौधरी की तीन बहुओं के पास गहने थे, पर स्त्री का गहना ऊख का रस है, जो पेरने से ही निकलता है। चौधरी जाति का ओछा पर स्वभाव का ऊँचा था। उसे ऐसी नीच बात बहुओं से कहते संकोच होता था। कदाचित् यह नीच विचार उसके हृदय में उत्पन्न ही नहीं हुआ था, किंतु तीनों बेटे यदि जरा भी बुद्धि से काम लेते, तो बूढ़े को देवताओं की शरण लेने की आवश्यकता न होती। परंतु यहाँ तो बात ही निराली थी। बड़े लड़के को घाट के काम से फुरसत न थी। बाकी दो लड़के इस जटिल प्रश्न को विचित्र रूप से हल करने के मंसूबे बाँध रहे थे।

मझले झींगुर ने मुँह बनाकर कहा-ऊँह! इस गाँव में क्या धरा है। जहाँ भी कमाऊँगा, वही खाऊँगा। पर जीतनसिंह की मूँछे एक-एक करके चुन लूँगा।

छोटे फक्कड़ ऐंठकर बोले- मूँछे तुम चुन लेना। नाक मैं उड़ा दूँगा। नककटा बना घूमेगा। इस पर दोनों खूब हँसे और मछली मारने चल दिए।

इस गाँव में एक बूढ़े ब्राह्मण भी रहते थे। मंदिर में पूजा करते और नित्य अपने यजमानों को दर्शन देने नदी पार जाते, पर खेवे के पैसे न देते। तीसरे दिन वह जमींदार के गुप्तचरों की आँख बचाकर सुक्खू के पास आए और सहानुभूति के स्वर में बोले- चौधरी! कल ही तक मियाद है और तुम अभी तक पड़े-पड़े सो रहे हो। क्यों नहीं घर की चीज-वस्तु ढूँढ़-ढाँढ़कर किसी और जगह भेज देते? न हो समधियाने पठवा दो। जो कुछ बचा रहे, वही सही। घर की मिट्टी खोदकर थोड़े ही कोई ले जाएगा।

चौधरी लेटा था, उठ बैठा और आकाश की ओर निहारकर बोला-जो कुछ उसकी इच्छा है, होगा। मुझसे यह जाल न होगा।

इधर कई दिन की निरंतर भक्ति उपासना के कारण चौधरी का मन शुद्ध और पवित्र हो गया था। उसे छल-प्रपंच से घृणा उत्पन्न हो गई थी। पंडित जी इस काम में सिद्धहस्त थे, लज्जित हो गए।

परंतु चौधरी के घर के अन्य लोगों को ईश्वरेच्छा पर इतना भरोसा न था। धीरे-धीरे घर के बर्तन-भाड़े खिसकाए जाते थे। अनाज का एक दाना भी घर में न रहने पाया। रात को नाव लदी हुई जाती और उधर से खाली लौटती थी। तीन दिन तक घर में चूल्हा न जला। बूढ़े चौधरी के मुँह में अन्न की कौन कहे, पानी की एक बूँद भी न पड़ी। स्त्रियाँ भाड़ से चने भुनाकर चबातीं और लड़के मछलियाँ भून-भूनकर उड़ाते; परंतु बूढ़े की इस एकादशी में यदि कोई शरीक था तो वह उसकी बेटी गंगाजली थी। वह बेचारी अपने बूढ़े बाप को चारपाई पर निर्जल छटपटाते देख, बिलख-बिलख

कर रोती।

लड़कों को अपने माता-पिता से वह प्रेम नहीं होता, जो लड़कियों को होता है। गंगाजली इस सोच-विचार में मग्न रहती कि दादा की किस भाँति सहायता करूँ। यदि हम सब भाई-बहन मिलकर जीतनसिंह के पास जाकर दया-भिक्षा की प्रार्थना करें, तो वे अवश्य मान जाएंगे; परंतु दादा को कब यह स्वीकार होगा? वह यदि एक बड़े साहब के पास चले जाए तो सब कुछ बात-की-बात में बन जाए। किंतु उनकी तो जैसे बुद्धि मारी गई है। इसी उधेड़बुन में उसे एक उपाय सूझ पड़ा, कुम्हलाया हुआ मुखारविंद खिल उठा।

पुजारी जी सुक्खू चौधरी के पास से उठकर चले गए थे और चौधरी उच्च स्वर से अपने सोए देवताओं को पुकार-पुकार बुला रहे थे। निदान गंगाजली उनके पास जाकर खड़ी हो गई। चौधरी ने उसे देखकर विस्मित स्वर में पूछा- क्यों बेटी! इतनी रात गए क्यों बाहर आई!

गंगाजली ने कहा- बाहर रहना तो भाग्य में लिखा है, घर में कैसे रहूँ ! सुक्खू ने जोर की हाँक लगाई-कहाँ गए तुम कृष्ण मुरारी, मेरे दुख हरो। गंगाजली खड़ी थी, बैठ गई और धीरे से बोली- भजन गाते तो आज तीन दिन हो गए। घर बचाने का कुछ उपाय सोचा कि इसे यों ही मिट्टी में मिला दोगे? हम लोगों को क्या पेड़-तले रखोगे?

चौधरी ने व्यथित स्वर से कहा- बेटी मुझे तो कोई उपाय नहीं सूझता। भगवान् जो चाहेंगे, होगा वेग चलो गिरधर गोपाल, काहे विलंब करो।

गंगाजली ने कहा- मैंने एक उपाय सोचा है, कहो तो कहूँ।

चौधरी उठकर बैठ गए और पूछा- कौन उपाय है बेटी ?

गंगाजली ने कहा- मेरे गहने झगडू साहू के यहाँ गिरों रख दो। मैंने जोड़ लिया है। देने भर के रुपए हो जाएंगे।

चौधरी ने ठंडी साँस लेकर कहा-बेटी! तुमको मुझसे यह कहते लाज नहीं आती? वेद-शास्त्र में मुझे तुम्हारे गाँव के कुएँ का पानी पीना भी मना है। तुम्हारी ड्योढ़ी में पैर रखने का निषेध है। क्या तुम मुझे नरक में ढकेलना चाहती हो?

गंगाजली उत्तर के लिए पहले ही से तैयार थी, बोली- मैं अपने गहने तुम्हें दिए थोड़े ही देती हूँ। इस समय लेकर काम चलाओ, चैत में छुड़ा देना।

चौधरी ने कड़ककर कहा- यह मुझसे न होगा।

गंगाजली उत्तेजित होकर बोली-तुमसे यह न होगा, तो मैं आप ही जाऊँगी मुझसे घर की यह दुर्दशा नहीं देखी जाती।

चौधरी ने झुँझलाकर कहा- बिरादरी को कौन मुँह दिखाऊँगा?

गंगाजली ने चिढ़कर कहा- बिरादरी में कौन ढिंढोरा पीटने जाता है?

चौधरी ने फैसला सुनाया-जग हँसाई के लिए मैं अपना धर्म न बिगाड़ूँगा। गंगाजली बिगड़कर बोली-मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारे ऊपर मेरी हत्या पड़ेगी। मैं आज ही बेतवा नदी में कूद पड़ूँगी। तुमसे चाहे घर में आग लगाते देखा जाए, पर मुझसे न देखा जाएगा।

चौधरी ने ठंडी साँस लेकर कातर स्वर में कहा-बेटी, मेरा धर्म नाश मत करो। यदि ऐसा ही है, तो अपनी किसी भावज के गहने माँगकर लाओ।

गंगाजली ने गंभीर भाव से कहा भावजों से कौन अपना मुँह नुचवाने जाएगा? उनको फिकर होती, तो क्या मुँह में दही जमा था, कहती नहीं?

चौधरी निरुत्तर हो गए। गंगाजली घर में जाकर गहनों की पिटारी लाई और एक-एक करके सब गहने चौधरी के अँगोछे में बाँध दिए। चौधरी ने आँख में आँसू भरकर कहा-हाय राम! इस शरीर की क्या गति लिखी है। यह कह कर उठे। बहुत सम्हालने पर भी आँखों में आँसू न छिपे।

रात का समय था। बेतवा नदी के किनारे-किनारे मार्ग को छोड़कर सुक्खू चौधरी गहनों की गठरी काँख में दबाए इस तरह चुपके-चुपके चल रहे थे, मानों पाप

की गठरी लिए जाते हैं। जब वह झगड़ू साहू के मकान के पास पहुँचे, तो ठहर गए आँखें खूब साफ कीं जिसमें किसी को यह बोध न हो कि चौधरी रोता था।

झगड़ू साहू धागे की कमानी की एक मोटी ऐनक लगाए, बही-खाता फैलाए हुक्का पी रहे थे और दीपक के धुँले प्रकाश में उन अक्षरों के पढ़ने की व्यर्थ चेष्टा में लगे थे, जिनमें स्याही की बहुत किफायत की गई थी। बार-बार ऐनक को साफ करते और आँख मलते, पर चिराग की बत्ती उकसाना या दोहरी बत्ती लगाना शायद इसलिए उचित नहीं समझते थे कि तेल का अपव्यय होगा। इसी समय सुक्खू चौधरी ने आकर कहा-जै रामजी!

झगड़ू साहू ने देखा। पहचान कर बोले जय राम चौधरी! कहो, मुकदमें में क्या हुआ? यह लेन-देन बड़े झंझट का काम है। दिन-भर सिर उठाए छुट्टी नहीं मिलती।

चौधरी ने पोटली को खूब सावधानी से छिपाकर लापरवाही के साथ कहा-अभी तक तो कुछ नहीं हुआ। कल इजराय डिगरी होने वाली है। ठाकुर साहब ने न जाने कब का बैर निकाला है। हमको दो-तीन दिन की भी मुहलत होती, तो डिगरी न जारी होने पाती। छोटे साहब और बड़े साहब दोनों हमको अच्छी तरह जानते हैं। अभी इसी साल मैंने उनसे नदी-किनारे घंटों बातें कीं, किंतु एक तो बरसात के दिन, दूसरे एक दिन की भी मुहलत नहीं, क्या करता। इस समय मुझे रुपयों की चिंता है।

झगड़ू साहू ने विस्मित होकर पूछा- 'तुमको रुपयों की चिंता! घर में भरा है, वह किस दिन काम आवेगा।' झगड़ू साहू ने यह व्यंग्यबाण नहीं छोड़ा था। वास्तव में उन्हें और सारे गाँव को विश्वास था कि चौधरी के घर में लक्ष्मी महारानी का अखंड राज्य है।

चौधरी का रंग बदलने लगा। बोले- साहूजी! रुपया होता तो किस बात की चिंता थी? तुमसे कौन छिपावे? आज तीन दिन से घर में चूल्हा नहीं जला, रोना-पीटना पड़ा है। अब तो तुम्हारे बसाए बसूँगा। ठाकुर साहब ने तो उजाड़ने में कोई कसर न छोड़ी।

झगड़ू साहू जीतनसिंह को खुश रखना जरूर चाहते थे, पर साथ ही चौधरी को भी नाखुश करना मंजूर न था। यदि सूद-दर-सूद जोड़कर मूल तथा ब्याज सहज में वसूल हो जाए, तो उन्हें चौधरी पर मुफ्त का अहसान लादने में कोई आपत्ति न थी। यदि चौधरी के अफसरों की जान-पहचान के कारण साहूजी का टैक्स से गला छुट जाए, जो अनेकों उपाय करने, अहलकारों की मुट्ठी गरम करने पर भी नित्य प्रति उनकी तोंद की तरह बढ़ता ही जा रहा था, तो क्या पूछना! बोले- क्या कहें चौधरी जी, खर्च के मारे आजकल हम भी तबाह हैं। लेहने वसूल नहीं होते। टैक्स का रुपया देना पड़ा। हाथ बिलकुल खाली हो गया। तुम्हें कितना रुपया चाहिए?

चौधरी ने कहा- सौ रुपए कि डिगरी है। खर्च-वर्च मिलाकर दो सौ के लगभग समझो।

चौधरी अब अपने दाँव खेलने लगे। पूछा- तुम्हारे लड़कों ने तुम्हारी कुछ भी मदद न की। वह सब भी तो कुछ-न-कुछ कमाते हैं?

साहूजी का यह निशाना ठीक पड़ा। लड़कों की लापरवाही से चौधरी के मन में जो कुत्सित भाव भरे थे, वह सजीव हो गए। बोला- भाई, लड़के किसी काम के होते तो यह दिन ही क्यों देखना पड़ता? उन्हें तो अपने भोग-विलास से मतलब। घर-गृहस्थी का बोझ मेरे सिर पर है। मैं इसे जैसे चाहूँ सँभालू। उनसे कुछ सरोकार नहीं, मरते दम भी गला नहीं छूटता। मरूँगा तो सब खाल में भूसा भराकर रख छोड़ेंगे। गृह कारज नाना जंजाला।

झगड़ू ने दूसरा तीर मारा-क्या बहुओं से भी कुछ न बन पड़ा?

चौधरी ने उत्तर दिया-बहू-बेटे सब अपनी-अपनी मौज में मस्त हैं। मैं तीन दिन तक द्वार पर बिना अन्न-जल के पड़ा था, किसी ने बात तक भी नहीं पूछी। कहाँ की सलाह, कहाँ की बातचीत। बहुओं के पास रुपए नहीं, पर गहने तो वे भी मेरे बनवाए हुए। दुर्दिन के समय यदि दो-दो थान उतार देतीं, तो क्या मैं छुड़ा न देता? सदा यही दिन थोड़े ही रहेंगे।

झगड़ू समझ गए कि यह महज जबान का सौदा

है और वह जबान का सौदा भूल कर भी न करते थे। बोले-तुम्हारे घर के लोग भी अनूठे हैं। क्या इतना भी नहीं जानते कि बूढ़ा रुपए कहाँ से लाएगा? अब समय बदल गया। या तो कुछ जायदाद लिखो या गहने गिरों रखो, तब जाकर कहीं रुपया मिले। इसके बिना रुपए कहाँ? इसमें भी जायदाद में सैकड़ों बखेड़े पड़े हैं। सुभीता गिरों रखने में ही है। हाँ, तो जब घरवालों को इसकी कोई फिक्र नहीं, तो तुम क्यों व्यर्थ जान देते हो यही न होगा कि लोग हँसेंगे। यह लाज कहाँ तक निबाहोगे?

चौधरी ने अत्यंत विनीत होकर कहा-साहजी, यह लाज तो मारे डालती है। तुमसे क्या छिपा है? एक दिन था कि हमारे दादा-बाबा महाराज की सवारी के साथ चलते थे और अब एक दिन यह है कि घर की दीवार तक बिकने की नौबत आ गई है। कहीं मुँह दिखाने को भी जी नहीं चाहता। यह लो गहनों की पोटली। यदि लोकलाज न होती, तो इसे लेकर कभी यहाँ न आता। परंतु यह अधर्म इसी लाज के निबाहने के कारण करना पड़ा है।

झगडू साहू ने आश्चर्य में होकर पूछा-यह गहने किसके हैं?

चौधरी ने सिर झुकाककर बड़ी कठिनता से कहा-मेरी बेटी गंगाजली के।

झगड़ी साहू विस्मित हो गए। बोले 'अरे! राम-राम!

चौधरी ने कातर स्वर में कहा-डूब मरने को जी चाहता है।

झगडू ने बड़ी धार्मिकता के साथ स्थिर होकर कहा- शास्त्र में बेटी के गाँव का पेड़ देखना मना है।

चौधरी ने दीर्घ निःश्वास छोड़कर करुणस्वर में कहा- न जाने नारायण कब मौत देंगे। भाईजी ! तीन लड़कियाँ ब्याहीं। कभी भूलकर भी उनके द्वार का मुँह नहीं देखा। परमात्मा ने अब तक तो टेक निबाही है, पर अब न जाने मिट्टी की क्या दुर्दशा होने वाली है।

झगडू साहू 'लेखा जौ-जौ, बखशीस सौ-सौ' के सिद्धांत पर चलते थे। सूद की एक कौड़ी भी छोड़ना उनके लिए हराम था। यदि महीने का एक दिन भी लग जाता, तो पूरे महीने का सूद वसूल कर लेते। परंतु नवरात्र में नित्य दुर्गापाठ करवाते थे। पितृपक्ष में रोज ब्राह्मणों को सीधा बाँटते थे। बनियों की धर्म में बड़ी निष्ठा होती है। झगडू साहू के द्वार पर साल में एक बार भागवत पाठ अवश्य होता। यदि कोई दीन ब्राह्मण लड़की ब्याहने के लिए उनके सामने हाथ पसारता तो वह खाली हाथ न लौटता, भीख माँगने वाले ब्राह्मणों को, चाहे वह कितने ही संडे-मुसंडे हों, उनके दरवाजे पर फटकार नहीं सुननी पड़ती थी। उनके धर्मशास्त्र में कन्या के गाँव के कुएं का पानी पीने से प्यासा मर जाना अच्छा था। वह स्वयं इस सिद्धांत के भक्त थे और इस सिद्धांत के अन्य पक्ष-पाती उनके लिए महामान्य देवता था। वे पिघल गए; मन में सोचा, यह मनुष्य तो कभी ओछे विचारों को मन में नहीं लाया निर्दय काल की ठोकर से अधर्म मार्ग पर उतर आया है, तो उसके धर्म की रक्षा करना हमारा कर्तव्य, धर्म है। यह विचार मन में आते ही झगडू साहू गद्दी से मनसद के सहारे उठ बैठे और दृढ़ स्वर से कहा-वही परमात्मा जिसने अब तक तुम्हारी टेक निबाही है, अब भी निबाहेगा। लड़की के गहने लड़की को दे दो। लड़की जैसी तुम्हारी है, वैसी ही मेरी भी है। यह लो रुपए, आज काम चलाओ। जब हाथ आ जायँ, दे देना।

चौधरी पर इस सहानुभूति का गहरा असर पड़ा। वह जोर-जोर से रोने लगा। उसे अपने भावों की धुन में कृष्ण भगवान् की मोहिनी मूर्ति सामने विराजमान दिखाई दी। वही झगडू जो सारे गाँव में बदनाम था, जिसकी खुद कई बार हाकिमों से शिकायत की थी, आज साक्षात् देवता जान पड़ता था। रुँधे हुए कंठ से गदगद हो बोला- झगडू! तुमने इस समय मेरी बात, मेरी लाज, मेरा धर्म, कहाँ तक कहूँ, मेरा सब-कुछ रख लिया। मेरी डूबती नाँव पार लगा दी। कृष्ण मुरारी तुम्हारे इस उपकार का फल देंगे और मैं तो तुम्हारा गुण जब तक जीऊँगा, गाता रहूँगा।

साभार

झाँसी की रानी



- सुभद्रा कुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी था।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी, वह नाना के सँग खेली थी,
बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थीं।
वीर शिवाजी की गाथाएं उसको याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार।
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निःसंतान मरे राजा जी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई विरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं और नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदेपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात।
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोई रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे। कलकत्ते के बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपुर के जेवर ले लो लखनऊ के नौलख हार'।
यों परदे की इज़्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कुटियों में भी विकल वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती, उनकी जो कुर्बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा आगे बड़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में।
जख्मी होकर वॉकर भागा उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था उसने मुहँ की खाई थी,
काना और मंदिरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं, अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

साभार.



प्रयागराज – मानिकपुर सेक्शन का
पिछली खिड़की निरीक्षण करते हुए
महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार



पलवल – आगरा सेक्शन का
पिछली खिड़की निरीक्षण करते हुए
महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार



केंद्रीय चिकित्सालय, प्रयागराज में कोविड
वार्ड एवं आक्सीजन आपूर्ति प्रणाली का
निरीक्षण करते हुए
महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार

टोक्यो ओल्पिक 2020 में उत्तर मध्य रेलवे के हॉकी खिलाड़ियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर उन्हें सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार





आजादी के अमृत महोत्सव पर 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' कार्यक्रम का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार

75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पौधारोपण करते हुए महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार एवं उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती पूनम कुमार

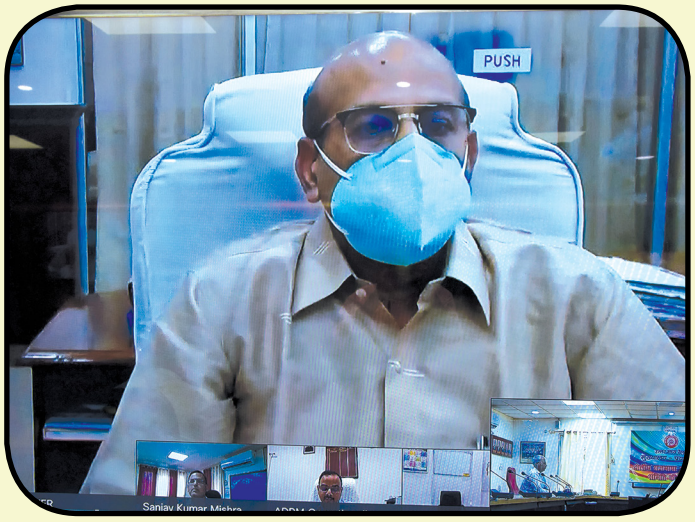




75वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कवि सम्मेलन में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार



75वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करते हुए कविगण



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ऑनलाइन बैठक में शामिल अधिकारियों को संबोधित करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधव श्री विनय कुमार त्रिपाठी

‘रेल संगम’ पत्रिका के अप्रैल-जून, 2021 अंक का विमोचन करते हुए तत्कालीन मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री नवीन कुमार सिन्हा





क्षेत्रीय रेल स्तर पर आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह



क्षेत्रीय रेल स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए प्रतिभागीगण

वापसी का अहसास



- आचार्य नीरज शास्त्री

शाम के सात बजे थे। आज सुबह ही रितिका अपने बच्चे को लेकर अस्पताल से लौटी थी। वह अपने कमरे में बिस्तर पर लेटे हुए कुछ सोच रही थी।

यह उसकी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन था क्योंकि पैंतालीस वर्ष की अवस्था में वह अपने पहले बच्चे की माँ बनकर अपने घर लौटी थी। वह बार-बार अपने बच्चे का मुँह चूमकर उसे सहला रही थी। ऐसा करते हुए उसकी आँखों से अचानक आँसुओं की बूँदें ढुलक आई।

तभी दरवाजा खोलकर रजत ने प्रवेश किया और वह रितिका के पास आकर बैठ गया। उसे देखते ही रितिका ने आँसू पोंछ लिए। रजत रितिका का पति है। रजत की आयु अभी इक्कीस वर्ष हुई है। वह शारीरिक रूप से सबल किंतु हृदय से सरल है। रितिका को आँसू पोंछते देखकर रजत ने कहा- 'आज आपकी आँखों में आँसू नहीं होने चाहिए। आज आपको जिंदगी के पूरे संघर्ष का सुफल मिला है। इसलिए आपको खुश होना चाहिए।'

'मैं खुश तो हूँ'- रितिका ने कहा।

रजत ने रितिका का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा- 'बेशक मैं आपका पति हूँ... लेकिन मेरे पालन-पोषण से लेकर मुझे काबिल बनाने तक की जिम्मेदारी आपने निभाई है। जिंदगी के किसी भी मोड़ पर मैं आपकी आँखों में आँसू नहीं आने दूंगा।'

रितिका ने रजत के चेहरे की ओर देखा।

वह बोला- 'मेरी दृष्टि में आप जीती-जागती देवी हैं, मंदिर में बैठी देवी से अलग, मेरी जिंदगी को सँवारने वाली देवी। आपकी पूजा और आपके प्रति श्रद्धा ही मेरे जीवन का उद्देश्य है।''

रितिका ने मुस्कराते हुए कहा- 'तुम आज भी उतने ही मासूम हो रजत! जितने कि बचपन में थे।'

यह कहकर वह कुछ सोचने लगी। उसे अतीत की स्मृतियों ने घेर लिया। उसे याद आया वह दिन जब वह सुधीर की दुल्हन बनकर सुधीर के घर आई थी। कितनी खुश थी वह। सुधीर उसे जान से ज्यादा चाहता था। सुधीर के पिता मि. कपूर भी रितिका को अपनी बेटी की तरह मानते थे। घर में रितिका, सुधीर और मि. कपूर तीन ही प्राणी थे। सुधीर की माँ सुधीर की शादी से तीन वर्ष पहले ही चल बसी थीं। इसलिए परिवार में स्त्री के नाम पर केवल रितिका थी। कितनी खुशहाल थी उसकी दुनिया। पर एक दिन अचानक वज्रपात हुआ। ऑफिस से घर लौटते वक्त एक्सीडेंट में सुधीर की मौत हो गई। रितिका के सारे सपने चूर-चूर हो गए। अभी तो उसके हाथों की मेंहदी का रंग भी फीका नहीं पड़ा था कि दामन के सितारे झड़ गए। वह बहुत दुखी थी परंतु उसने स्वयं को सँभाला क्योंकि मि. कपूर पुत्र की मौत के सदमे में थे। जैसे-तैसे एक महीना गुजरा। रितिका के माता-पिता ने उससे कहा- 'बेटी! शादी कर लो, तुम्हें पूरा जीवन जीना है, लेकिन रितिका ने उत्तर 'नहीं' में दिया। एक दिन मि. कपूर ने रितिका को समझाने की कोशिश की- 'बेटा! तुम दूसरी शादी कर लो। पहाड़ जैसी जिंदगी तुम्हारे सामने है। अभी तुमने देखा ही क्या है?' रितिका ने उत्तर दिया 'नहीं पापा! मैं शादी नहीं करूँगी।'

मि. कपूर बोले- 'बिटिया! सुधीर के न रहने का जितना दुख है, उतना ही दुख तुम्हारे अकेलेपन का है। बेटा! किसके सहारे जिओगी?'

रितिका सुबकते हुए बोली- 'पापा! मैं अपने सुख के लिए आपको अकेला नहीं छोड़ सकती। मेरे सिवाय अब आपका है ही कौन? कौन आपका ख्याल रखेगा?'

मि. कपूर ने उत्तर दिया- 'बेटा! मेरा क्या है? आधी उम्र गुजर चुकी है, आधी भी कट जाएगी।'

रितिका सिसकते हुए बोली- 'नहीं पापा! मैं किसी भी कीमत पर आपको अकेला नहीं छोड़ सकती। सुधीर नहीं तो क्या, मैं जीवन भर आपकी सेवा करूँगी।'

मि कपूर की आँखें भर आईं। वे रितिका को गले लगाकर रोए। वे सिसकते हुए बोले- 'बेटा! तेरे जैसी बहू

या बेटी पाकर जीवन धन्य हो जाता है। तू औरत नहीं देवी है। पर एक बात सोच बेटा! अपना दुख किससे कहेगी तू?'

रितिका ने दृढ़ता से कहा- 'आप बहुत प्यार करते हैं न मुझसे।'

मि. कपूर ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई तो रितिका ने कहा- 'तो ठीक है पापा! मुझे वचन दो कि आप दूसरी शादी करोगे। मुझे दुख कहने के लिए सास मिल जाएगी और आपको जीवन साथी। वचन दो पापा, आपको मेरी कसम।'

मि. कपूर रुआँसे स्वर में बोले- 'ठीक है बेटा! तेरे सुख के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।' .....और फिर अपने घर काम के लिए आने वाली बेसहारा विधवा कमला को रितिका ने मि. कपूर से शादी के लिए मना लिया। शादी से पहले ही रितिका कमला के मान-सम्मान का पूरा ध्यान रखती थी, किंतु शादी के बाद उसने कमला को माँ की तरह ही माना और सेवा में भी कोई कमी न छोड़ी। एक साल बाद कमला ने एक पुत्र को जन्म दिया। रितिका ने इसका जश्न मनाया। मि. कपूर और कमला को बधाई दी। उसने ही बच्चे का नाम रखा- 'रजत'। रजत का पालन पोषण भी सही अर्थों में रितिका ही कर रही थी। वह स्वयं ही उसे खिलाने-पिलाने के साथ-साथ पढ़ाती भी थी। धीरे-धीरे वह बड़ा हुआ।

मि. कपूर और कमला ने रजत को कभी नहीं बताया कि रितिका से उसका क्या रिश्ता है। जब भी रजत ने पूछा वे बोले- 'वह देवी है! देवी के साथ भाव का रिश्ता होता है। इस तरह वह मन ही मन रितिका के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता अनुभव करता था। वह उसे देवी कहकर ही संबोधित करता था। रितिका की मेहनत रंग लाई। पिछले वर्ष रजत की नियुक्ति केनरा बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर हो गई।

एक दिन मि. कपूर और कमला ने रितिका से बात की। कमला ने कहा रितिका! तुमने हमें नई जिंदगी दी है। हमारे दामन के काँटों को चुनकर हमारी झोली खुशियों से भर दी। आज हम तुमसे कुछ माँगना चाहते हैं।'

रितिका ने पूछा- 'क्या माँगना चाहते हैं आप? अधिकार से कहिए। आपका हर आदेश मेरे लिए शिरोधार्य है माँ!'

मि. कपूर ने कहा- 'बेटा! रजत की शादी करनी है। तुमने जीवन भर वियोग के ताप में तपते हुए हमें सब कुछ दिया है। तुम देवी हो। बेटा! आज भी निराश मत करना।'

वह आश्चर्य से बोली- 'ऐसी क्या बात है पापा?'

मि. कपूर बोले- 'बेटा! ...हमारी इच्छा है .. तुम रजत से शादी कर लो।'

वह बोली- 'पापा! यह तो सोचिए कि यह उचित है या अनुचित.... मैंने उसे पाल-पोषकर बड़ा किया है और कभी रजत से पूछा है आपने?'

मि. कपूर ने उत्तर दिया... 'हाँ! पूछा है।' वर्षों से रजत पूछ रहा था कि उसका तुमसे क्या रिश्ता है। आज उस रिश्ते को नाम दे दो। अनुचित कुछ भी नहीं है रितिका! वंश भी आगे बढ़ाना है।'

वह बोली- 'मुझे धर्म संकट में मत डालिए।'

लेकिन मि. कपूर और कमला के तर्क सुनकर उसने कहा- 'मुझे सोचने का समय दीजिए। मैं भी रजत से बात करना चाहती हूँ। यदि उचित लगा तो ही आपकी इस बात का मान रखा जा सकेगा।'

उस शाम को जब रजत लौटा तो रितिका ने उससे बात की। रजत ने उत्तर दिया- 'मैं आपके निर्णय को ही सर्वोपरि मानता हूँ। आपका प्यार पाकर इतना बड़ा हुआ हूँ। किसी भी रूप में सही, आगे भी आपका प्यार पाता रहूँ, यही इच्छा है। आप मेरे लिए देवी हैं और मैं आपका भावुक सेवक। मैं तो बस अपने रिश्ते के लिए कोई नाम चाहता हूँ।

रितिका ने अपने मम्मी-पापा से भी बात की।

वे बोले- 'रितिका! तेरा जीवन तेरे अपने ही परिवार में संयोग से चलता रहे। तेरी चुनरी में खुशियों के रंग भर जों, इससे अच्छा और क्या हो सकता है? मान ले बेटा! तू शादी कर ले। रितिका यह सब सोच ही रही थी कि रजत ने टोका- 'क्या हुआ देवी! क्या सोच रही हैं आप?'

वह बोली- 'रजत! आज तुम्हारी शक्ल में मुझे सुधीर की वापसी का अहसास हो रहा है।' इतना कहकर वह रजत के गले लग गई।

गायत्री निवास 34/2,

लाजपत नगर, एन.एच-2,

सुरक्षा कवच योग



- मनमोहन भटनागर

योग का सामान्य अर्थ जोड़ना है। आध्यात्मिक संदर्भ में आत्मा को परमात्मा से जोड़ना ही योग है। हमारे देश में योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया को कहा जाता है। योग से शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत करने का काम किया जाता है। यह शब्द, प्रक्रिया और धारणा में ध्यान प्रक्रिया से संबंधित है। योग का भारत से बौद्ध धर्म प्रचारकों के माध्यम से चीन, जापान, तिब्बत, पूर्व एशिया सहित श्रीलंका तक प्रसार हुआ।

योग का नाता हमारी संस्कृति में अत्यंत प्राचीन काल से है। महर्षि पतंजलि ने योग के आठ पायदान बताए हैं। इन्हें आष्टांग योग कहा जाता है। इन्हें अपने जीवन, अपनी दिनचर्या में ढालकर व्यक्ति अपना जीवन सार्थक बना लेता है। योग की पहली सीढ़ी को यम और दूसरी सीढ़ी को नियम कहा जाता है। यम में साधक को सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह तथा नियम में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्राणिधान को अपनाना होता है। यम और नियम का उद्देश्य मनुष्य की मानसिक स्थिति को अवगुणों से मुक्त कर उसे ईश्वर साधना के लिए तैयार करना है। इस संपूर्ण उपक्रम में स्वाध्याय का अपना एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। स्वध्याय का सीधा अर्थ धर्म ग्रंथों में वर्णित आध्यात्मिक ज्ञान के संदर्भ में आत्म विश्लेषण अथवा स्वयं का अध्ययन करने से है। इस प्रकार स्वाध्याय योग के लिए अत्यंत उपयोगी एवं जरूरी है।

योग शब्द संस्कृत धातु 'युज्' से उत्पन्न हुआ है। जिसका सामान्य अर्थ है- व्यक्तिगत चेतना या आत्मा का सार्वभौमिक चेतना या रूह से मिलन। योग कोई नई विधा या तकनीक नहीं है। यह भारतीय ज्ञान-विज्ञान की पाँच हजार से भी अधिक वर्ष पुरानी अनुकरणीय जीवन शैली है। योग की परिभाषा में भी एवं योग सूत्र में चित्त वृत्तियों के नियंत्रण को योग कहा गया है। बिना मन के नियंत्रण के चित्त नियंत्रित नहीं हो सकता। अतः योग के लिए पहले मन पर नियंत्रण आवश्यक हो जाता है। प्राचीन काल से ही हमारी शिक्षा पद्धति में हमेशा ही मन को नियंत्रण में रखने की बात प्रमुखता से सिखाई जाती है।

हम देखें तो पोंगे कि योग एक संपूर्ण स्वाध्याय का विज्ञान है। आज की इस आपाधापी भरी जिंदगी में ऐसे अनेकों क्षण आते हैं जो हमारी दैनिक गतिविधियों की गतिशीलता में अवरोध ला देते हैं। हम किसी भी क्षेत्र में क्यों न हों, हमारे इर्द-गिर्द ऐसे अनेक कारण विद्यमान रहते हैं जो हमें अनावश्यक चिढ़चिढ़ाहट, अस्वस्थता, थकान, तनाव एवं उत्तेजना देते हैं। ऐसी परिस्थितियों से लड़ने एवं अपना बचाव करने के लिए तथा स्वयं को स्वस्थ एवं ऊर्जावान बनाए रखने के लिए तथा अपनी नित्यचर्या को अस्त-व्यस्त होने से बचाए रखने के लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन कर योग को स्थान देना होगा। योग हमारी भारतीय संस्कृति की अत्यंत प्राचीन पहचान है। हम अपने जीवन में एक साथ कई चरित्रों का निर्वहन करते हैं। हमारे पास यह एक बड़ा विकल्प होता है कि हम इन्हें योगी की तरह बितों या फिर बिना योग के। इनमें एक जिम्मेदार है, दूसरा नहीं। एक-दूसरे की देखभाल, मिलकर रहना और जिम्मेदारियाँ उठाना, सब कुछ योग के माध्यम से संभव है। योग से ऊर्जा में बढ़ोत्तरी और उत्साह का जन्म होता है। यही हमें और अधिक जिम्मेदारियाँ लेने के लिए प्रेरित करता है। यदि हमारे पास ऊर्जा तथा उत्साह है तो हम जिम्मेदारियाँ उठा सकते हैं। इसमें हमें कोई बोझ नहीं लगेगा। यदि हम किसी भी विवाद की जड़ में जाते हैं तो पोंगे कि उसमें तनाव, अविश्वास एवं डर ही है। योग इन तीनों को दूर करने में हमारी मदद करता है। डर तो तभी दूर हो जाता है, जब हम अपनी समझ को विस्तार देते हैं और अपनी चेतना को विस्तृत करते हैं। प्रत्एक व्यक्ति को अपना ही हिस्सा समझते हैं। योग इस तरह के भय को मन से बाहर निकालने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। योग के आठ भाग है, इसमें से एक है शारीरिक मुद्रा। लेकिन इसका केंद्रीय तत्व है- मनः स्थिति को समता में बनाए रखना। जब

हम कोई भी काम मन से करते हैं, तब हमें पता होता है कि हम क्या कर रहे हैं और यही तथ्य हमें योगी बनाता है।

विज्ञान एक व्यस्थित और तार्किक ज्ञान-समझ का ही पर्याय है। इसीलिए योग भी एक विज्ञान है। यह जानना कि 'यह क्या है' - विज्ञान है और जानना कि 'मैं कौन हूँ' - अध्यात्म है। लेकिन है तो दोनों ही विज्ञान। योग का समस्त विज्ञान हम सभी में जाने-अनजाने समाहित रहता है। चाहे वह हमारी बैठने-उठने की मुद्रों हो या फिर हमारी श्वसन क्रिया। योग में श्वसन क्रिया पर ध्यान दें तो हम अपनी भावनाओं को भी निश्चित तौर पर नियंत्रित कर सकते हैं तथा नकारात्मकता से भी दूर रह सकते हैं। यही योग एवं योगी का सकारात्मक पहलू है।

वर्तमान पर्यावरण में यदि देखें तो हम पोंगे कि योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता। योग हमारे जीवन के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है। इसे अपनाकर हम जीवन में जटिल से जटिल रोगों को जड़ से समाप्त कर सकते हैं। साथ ही साथ अपने शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी विकसित कर सकते हैं। योग को अपने जीवन का अंग बनाकर हम अपने शरीर को पुष्ट बनाकर, मन की एकाग्रता को कायम करने और अपनी आत्मविश्वास रूपी शक्ति में सुधार करने की कुंजी पा सकते हैं।

दुनिया के लिए एक चुनौती बन चुके इस कोरोना काल में योग ने आत्मिक शक्ति बढ़ाकर लोगों के प्राणों की रक्षा की है। जब चारों ओर संक्रमण का कोहराम मचा था तो योग सेहत का एक ऐसा मंत्र बन गया, जिसे सभी चिकित्सा पद्धतियों के महारथियों ने दोहराया। सभी ने माना कि हम घर पर रहकर भी प्राणायाम, योगासन एवं ध्यान करके स्वास्थ रह सकते हैं। योग से अनभिज्ञ लोग भी इस महामारी के दौरान योग के महत्व को समझ चुके हैं। योग को हमें अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। योग तन और मन को साधने का सबसे सरल और सर्वोत्तम माध्यम है।

सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी

उत्तर मध्य रेलवे, झाँसी

ईश्वर की पुकार



- सोमेश पांडेय

सांप्रदायिक विभेद से आहत ईश्वर कहे पुकार के,

हे वृहद् मानव-मन! जाति-सम्प्रदाय के ऊपर तू जाग रे!

इस श्वेतांबर में रुधिर रंजित बादल का क्या है काम रे?

संप्रदाय का रंग लाल – न रक्त, किंतु गुलाल जान रे!

क्या हिंदू, क्या मुश्किल, क्यूँ लड़ पड़ा तू नाम पे?

क्या ऊँच, क्या नीच? कौन आगे, कौन पीछे? सब हैं बच्चे भगवान के।

यह किसने खून के छींटे मेरे आँचल पर बिखरा दिए?

किसने अल्लाह, महादेव के नाम पर द्वेषाग्नि से सहस्त्र घर जला दिए?

क्यों लड़ते हो गीता कुरान पर जब दोनों ही तुमने पढ़े नहीं?

क्या इसी संप्रदाय विभेद के कारण आगे हम कभी बढ़े नहीं?

मैं हूँ ईद की खीर में, मैं हूँ गंगा के नीर में,

हूँ मैं सिक्ख के कृपाण में, हूँ मैं ही राम के बाण में।

मैं हवन कुंड के शोलों में, मैं हूँ बारूद के गोलों में

मैं हूँ प्रकृति के कण-कण में, मैं हूँ मानव के क्षण-क्षण में।

मैं मक्का में, मैं जेरुसलम में, मेरा हरमंदिर साहिब में भी विस्तार।

अयोध्या, काशी, वृंदावन.. मुझमे ही है यह पूरा संसार।

मुझसे ही मुझे मारने की व्यर्थ चेष्टा क्यूँ करते हो?

मेरे ही विभिन्न रूपों में लड़कर, खुद पे गर्व क्यूँ करते हो?

क्या जानते नहीं? शांति अमन है उच्चतम भक्ति, परोपकार उत्तम व्यवहार।

'अनेकता में एकता' के मंत्र से ही होगा अखंड एवं पूर्ण संसार।

त्याग दो यह अस्त्र सभी अपनाओ अब सौहार्द का पाठ।

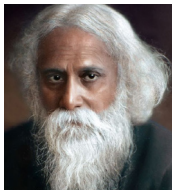
मित्रता से संपूर्णता है, अब चलो साथ, अब बढ़ो साथ।

द्वारा - संतोष पांडेय

मुख्य नियंत्रक, परिचालन विभाग

उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय, प्रयागराज

काबुलीवाला



- रवीन्द्रनाथ टैगोर

मेरी पाँच बरस की लड़की मिनी से क्षण भर भी बिना बात किए रहा नहीं जाता। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने एक साल ही लगाया था। उसके बाद से जब तक वह जागती रहती है, उस समय का एक भी क्षण वह खामोश रहकर नष्ट नहीं करती है। उसकी माँ कभी कभी धमका कर उसका मुँह बंद कर देती हैं, पर मैं ऐसा नहीं कर पाता। मिनी अगर खामोश रहे, तो वह ऐसी अजीब सी लगती है कि मुझसे उसकी चुप्पी ज्यादा देर तक सही नहीं जाती। यही कारण है कि मुझसे उसकी बातचीत कुछ ज्यादा उत्साह से चलती है।

सबेरे मैं उपन्यास का सत्रहवाँ अध्याय लिखने जा ही रहा था कि मिनी ने आकर शुरु कर दिया, 'बाबू, रामदयाल दरबान काका को कौवा कह रहा था। वह कुछ नहीं जानता, है न बाबा?'

संसार की भाषाओं की विभिन्नता के बारे में मैं उसे ज्ञान देने ही वाला था कि उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया, 'सुनो बाबू, भोला कह रहा था कि आसमान से हाथी सूँड से पानी बिखेरता है तभी बारिश होती है। ओ माँ, भोला झूठ मूठ ही इतना बकता है! बस बकता ही रहता है, दिन रात बकता रहता है बाबू।'

इस बारे में मेरी राय का जरा भी इंतज़ार किए बिना ही वह अचानक पूछ बैठी, 'क्यों बाबू, अम्मा तुम्हारी कौन लगती है?'

मैंने मन ही मन कहा, 'साली' और मुँह से कहा, 'मिनी, तू जा, जाकर भोला के साथ खेल। मुझे अभी काम करना है। वह मेरी लिखने की मेज के पास मेरे पैरों के निकट बैठ गई और दोनों घुटने और हाथ हिला हिला कर, फुर्ती से मुँह चला-चलाकर रटने लगी, 'आगड़म बागड़म घोड़ा दुम साजे।' उस समय मेरे उपन्यास के सत्रहवें अध्याय में प्रताप सिंह कंचन माला को लेकर अंधेरी रात में कारागार की ऊँची खिड़की से नीचे नदी के पानी में कूद रहे थे।

मेरा कमरा सड़क के किनारे था। यकायक मिनी अक्को बक्को तीन तिलक्को का खेल छोड़कर खिड़की के पास पहुँची और जोर जोर से पुकारने लगी, 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला!'

गंदे से ढीले कपड़े पहने, सिर पर पगड़ी बाँधे, कंधे पर झोली लटकाए और हाथ में अंगूर की दो चार पिटारियां लिए, एक लंबा सा काबुली धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। उसे देख मेरी बिटिया रानी के मन में कैसे भाव जगे होंगे यह बताना तो मुश्किल है, पर वह जोर जोर से उसे पुकार रही थी। मैंने सोचा, अभी कंधे पर झोली लटकाए एक आफत मेरे सिर पर सवार हो जाएगी और मेरा सत्रहवाँ अध्याय समाप्त होने से रह जाएगा।

लेकिन मिनी की पुकार पर जैसे ही काबुली ने हँस कर अपना चेहरा घुमाया और मेरे घर की ओर आने लगा, वैसे ही मिनी जान छुड़ाकर अंदर भागी और लापता हो गई। उसके मन में एक अंधविश्वास सा जम गया था कि झोली ढूँढने पर एकाध और मिन्नी जैसे जीवित इंसान मिल सकते हैं।

काबुली ने आकर हँसते हुए सलाम किया और खड़ा रहा। मैंने सोचा, हालांकि प्रताप सिंह और कंचनमाला की दशा बड़े संकट में है, फिर भी इस आदमी को घर बुलाकर कुछ न खरीदना ठीक न होगा।

कुछ चीज़ें खरीदीं। उसके बाद इधर उधर की चर्चा भी होने लगी। अब्दुल रहमान से रूस, अंग्रेज और सीमांत रक्षा नीति पर बातें होती रहीं।

अंत में उठते समय उसने पूछा, 'बाबू जी, तुम्हारी लड़की कहाँ गई?'

मिनी के मन से बेकार का डर दूर करने के लिए मैंने उसे अंदर से बुलवा लिया। वह मुझसे सट कर खड़ी हो गई। संदेह भरी दृष्टि से काबुली का चेहरा और उसकी झोली की ओर देखती रही। काबुली ने झोली से किशमिश और खुबानी देना चाहा, पर उसने किसी तरह से नहीं लिया। दुगने संदेह के साथ वह मेरे घुटनों के साथ चिपकी रही। पहला परिचय इसी तरह हुआ।

कुछ दिनों बाद, एक सवेरे किसी जरूरत से घर से बाहर निकला तो देखा, मेरी बिटिया दरवाजे के पास बेंच पर

बैठी बेहिचक बातें कर रही है। काबुली उसके पैरों के पास बैठा मुस्कुराता हुआ सुन रहा है, और बीच बीच में प्रसंग के अनुसार अपनी राय भी खिचड़ी भाषा में प्रदर्शित कर रहा है। मिनी के पाँच साल की उम्र के अनुभव में बाबू के अलावा ऐसा धैर्य वाला श्रोता शायद ही कभी मिला होगा। फिर देखा उसका छोटा सा आँचल बादाम और किशमिश से भरा हुआ है। मैंने काबुली से कहा, 'इसे यह सब क्यों दिया? ऐसा मत करना।' इतना कहकर जेब से एक अठन्नी निकालकर उसे दे दी। उसने बेझिझक अठन्नी लेकर झोली में डाल ली।

घर लौटकर देखा, उस अठन्नी को लेकर बड़ा हो हल्ला शुरु हो चुका था।

मिनी की माँ एक सफेद चमचमाता गोलाकार पदार्थ हाथ में लेकर मिनी से पूछ रही थी, 'तुझे अठन्नी कहाँ से मिली?'

मिनी ने कहा, 'काबुली वाले ने दी है।'

उसकी माँ बोली, 'काबुली वाले से तूने अठन्नी ली क्यों?'

मिनी रुआँसी सी होकर बोली, 'मैंने माँगी नहीं, उसने खुद ही दे दी।'

मैंने आकर मिनी को उस पास खड़ी विपत्ति से बचाया और बाहर ले आया।

पता चला कि काबुली के साथ मिनी की यह दूसरी ही मुलाकात हो ऐसी बात नहीं है। इस बीच वह रोज़ आता रहा और पिस्ता-बादाम की रिश्वत देकर मिनी के मासूम लोभी दिल पर काफी अधिकार जमा लिया।

इन दिनों मित्रों में कुछ बँधी बँधाई बातें और परिहास होता रहा। जैसे रहमान को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई उससे पूछती, 'काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला! तुम्हारी झोली में क्या है?'

रहमान एक बेमतलब नकियाते हुए कहता, 'हाथी।'

यानी उसकी झोली के भीतर हाथी है, यही उसके परिहास का सूक्ष्म सा अर्थ था। अर्थ बहुत ही सूक्ष्म हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी इस परिहास में दोनों को बड़ा मजा आता। सर्दियों की भोर में एक सयाने और एक कम उम्र बच्ची की सरल हँसी मुझे भी बड़ी अच्छी लगती।

उन दोनों में एक बात और चल रही थी। रहमान मिनी से कहता, 'खोखी, तुम ससुराल कभी मत जाना हाँ!'

बंगाली परिवार की लड़कियाँ बचपन से ही ससुराल शब्द से परिचित हो जाती हैं, लेकिन हम लोगों ने थोड़ा आधुनिक होने के कारण मासूम बच्ची को ससुराल के बारे में सचेत नहीं किया था। इसलिए रहमान की बातों का मतलब वह साफ साफ नहीं समझ पाती थी, लेकिन बात का कोई जवाब दिए बिना चुप रह जाना उसके स्वभाव के बिल्कुल विरुद्ध था। वह पलटकर रहमान से पूछ बैठती, 'तुम ससुराल जाओगे?'

रहमान काल्पनिक ससुर के प्रति अपना बहुत बड़ा सा घूँसा तानकर कहता, 'हम ससुर को मारेगा।'

यह सुनकर मिनी ससुर नाम के किसी अजनबी प्राणी की दुर्दशा की कल्पना कर खूब हँसती।

सर्दियों के उजले दिन थे। प्राचीन काल में इसी समय राजा लोग दिग्विजय करने निकलते थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कहीं नहीं गया। शायद इसीलिए मेरा मन संसार-भर में घूमा करता है। जैसे मैं अपने घर के ही किसी कोने में बसा हुआ हूँ। बाहर की दुनिया के लिए मेरा मन सदा बेचैन रहता है। किसी देश का नाम सुनते ही मन वहीं दौड़ पड़ता है। किसी विदेशी को देखते ही मेरा मन फौरन किसी नदी पहाड़ जंगल के बीच एक कुटिया का दृश्य देख रहा होता है। उल्लास से भरे एक स्वतंत्र जीवन का एक चित्र कल्पना में जाग उठता है।

इधर मैं भी इतनी सुस्त प्रकृति यानी कुन्ना किस्म का हूँ कि अपना कोना छोड़कर जरा बाहर निकलने पर ही सिर पर बिजली गिरने का सा अनुभव होने लगता है। इसलिए सवेरे अपने छोटे कमरे में मेज के सामने बैठकर काबुली से गप्पें लड़ाकर बहुत कुछ सैर सपाटे का उद्देश्य पूरा कर लिया करता हूँ। दोनों ओर ऊबड़ खाबड़, दुर्गम जले हुए, लाल लाल ऊँचे पहाड़ों की माला, बीच में सँकरे रेगिस्तानी रास्ते और उन पर सामान से लदे हुए ऊँटों का काफिला चल रहा है। पगड़ी बाँधे सौदागर और मुसाफिरों में कोई ऊँट पर तो कोई पैदल चले जा रहे हैं, किसी के हाथ में बरछी है तो किसी के हाथ में पुराने जमाने की चकमक पत्थर से दागी जाने वाली बंदूक। काबुली अपने मेघ गर्जन के स्वर में, खिचड़ी भाषा में अपने वतन के बारे में सुनाता रहता और वह चित्र मेरी आँखों के सामने काफिलों के समान गुजरता चला जाता।

मिनी की माँ बड़े ही शंकालु स्वभाव की है। रास्ते पर कोई आहट होते ही उसे लगता कि दुनिया भर के शराबी मतवाले होकर हमारे घर की ओर ही चले आ रहे हैं। यह दुनिया हर कहीं चोर डाकू, शराबी, साँप, बाघ, मलेरिया, सुअरों, तिलचट्टों और गोरों से भरी हुई है, यही उसका ख्याल है। इतने दिनों से (हालांकि बहुत ज्यादा दिन नहीं) दुनिया में रहने के बावजूद उसके मन से यह भय दूर नहीं हुआ। खासतौर से रहमान काबुली के बारे में वह पूरी तरह निश्चिंत नहीं थी। उस पर खास नजर रखने के लिए वह मुझसे बार बार अनुरोध करती थी। मैं उसके संदेह को हँसकर उड़ा देने की कोशिश करता, तो वह मुझसे एक एक करके कई सवाल पूछ बैठती, 'क्या कभी किसी का लड़का चुराया नहीं गया? क्या काबुल में गुलामी प्रथा लागू नहीं है? एक लंबे चौड़े काबुली के लिए एक छोटे से बच्चे को चुरा कर ले जाना क्या बिल्कुल असंभव है?'

मुझे मानना पड़ा कि यह बात बिल्कुल असंभव तो नहीं, पर विश्वास योग्य भी नहीं है। विश्वास करने की शक्ति हरेक में समान नहीं होती, इसलिए मेरी पत्नी के मन में डर बना रह गया। लेकिन सिर्फ इसलिए बिना किसी दोष के रहमान को अपने घर में आने से मैं मना नहीं कर सका।

हर साल माघ के महीनों में रहमान अपने मुल्क चला जाता है। इस समय वह अपने रुपयों की वसूली में बुरी तरह फँसा रहता है। घर-घर दौड़ना पड़ता है, फिर भी वह एक बार आकर मिनी से मिल ही जाता है। देखने में लगता है जैसे दोनों में कोई साजिश चल रही हो। जिस दिन सवेरे नहीं आ पाता उस दिन देखता हूँ शाम को आया है। अंधेरे कमरे के कोने में उस ढीला ढाला कुर्ता पायजामा पहने झोली झिंगोली वाले लंबे तगड़े आदमी को देखकर सचमुच मन में एक आशंका सी होने लगती है। लेकिन जब देखता हूँ कि मिनी 'काबुलीवाला काबुलीवाला' कहकर हँसते-हँसते दौड़ आती और अलग-अलग उम्र के दो मित्रों में पुराना सहज परिहास चलने लगता है, तो मेरा हृदय खुशी से भर उठता।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे से कमरे में बैठा अपनी किताब के प्रूफ देख रहा था। सर्दियों के दिन खत्म होने से पहले, आज दो तीन दिन से कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। चारों ओर सबके दाँत किटकिटा रहे थे। खिड़कियों के रास्ते धूप आकर मेज के नीचे मेरे पैरों पर पड़ रही थी। यह सेंक मुझे बड़ी सुहावनी लग रही थी। सुबह के करीब आठ बजे होंगे। गुलूबंद लपेटे सवेरे सैर को निकलने वाले लोग अपनी सैर समाप्त कर घर लौट रहे थे। इसी समय सड़क पर बड़ा शोर गुल सुनाई पड़ा।

देखा, हमारे रहमान को दो सिपाही बाँधे चले आ रहे हैं और उसके पीछे-पीछे तमाशबीन लड़कों का झुंड चला आ रहा है। रहमान के कपड़ों पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा है। मैंने दरवाजे से बाहर जाकर सिपाहियों से पूछा कि मामला क्या है।

कुछ उस सिपाही से कुछ रहमान से सुना कि हमारे पड़ोस में एक आदमी ने रहमान से उधार में एक रामपुरी चादर खरीदी थी। कुछ रुपए अब भी उस पर बाकी थे, जिन्हें देने से वह मुकर गया था। इसी पर बहस होते-होते रहमान ने उसे छुरा भौंक दिया।

रहमान उस झूठे आदमी के प्रति तरह-तरह की गंदी गालियाँ बक रहा था कि इतने में 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला' कहती हुई मिनी घर से निकल आई।

क्षण भर में रहमान का चेहरा उजली हँसी से खिल उठा। उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी, इसलिए झोली के बारे में दोनों मित्रों की पुरानी चर्चा न छिड़ सकी। मिनी आते ही एकाएक उससे पूछ बैठी, 'तुम ससुराल जाओगे?'

रहमान ने हँस कर कहा, 'वहीं तो जा रहा हूँ।'

उसे लगा उसके जवाब से मिनी मुस्कुराई नहीं। तब उसने हाथ दिखाते हुए कहा, 'ससुर को मारता, पर क्या करूँ हाथ बँधे हुए हैं।'

संगीन चोट पहुँचाने के जुर्म में रहमान को कई सालों की कैद की सजा हो गई। कभी उसके बारे में मैं धीरे-धीरे भूल ही गया। हम लोग जब अपने-अपने घरों में प्रतिदिन के कामों में लगे हुए आराम से दिन गुजार रहे थे, तब पहाड़ों पर आजाद घूमने वाला आदमी कैसे साल पर साल जेल की दीवारों के बीच गुजार रहा होगा, यह बात कभी हमारे मन में नहीं आई।

चंचल हृदय मिनी का व्यवहार तो और भी शर्मनाक था, यह बात उसके बाप को भी माननी पड़ेगी। उसने बड़े ही बेलौस ढंग से अपने पुराने मित्र को भुलाकर पहले तो नबी सईस से दोस्ती कर ली, फिर धीरे-धीरे जैसे उसकी उम्र बढ़ने लगी, वैसे-वैसे दोस्तों के बदले एक के बाद एक सहेलियाँ जुटने लगीं। यहाँ तक कि वह अब अपने बाबू के लिखने के कमरे में भी दिखाई नहीं देती। मैंने भी एक तरह

से उसके साथ कुट्टी कर ली है।

कितने ही वर्ष बीत गए। फिर सर्दियाँ आ गईं। मेरी मिनी की शादी तय हो गई। दुर्गा पूजा की छुट्टी में ही उसका ब्याह हो जाएगा। कैलाशवासिनी पार्वती के साथ-साथ मेरे घर की आनंदमयी भी पिता का घर अँधेरा कर पति के घर चली जाएगी।

बड़े ही सुहावने ढंग से आज सूर्योदय हुआ है। बरसात के बाद सर्दियों की नई धुली हुई धूप ने जैसे सुहागे में गलाए हुए साफ और खरे सोने का रंग अपना लिया है। कलकत्ता के गलियारों में आपस में सटी-टूटी ईंटोवाली गंदी इमारतों पर भी इस धूप की चमक ने एक अनोखी सुन्दरता बिखेर दी है।

हमारे घर पर सवेरा होने से पहले ही शहनाई बज रही है। मुझे लग रहा है, जैसे वह शहनाई मेरे सीने में पसलियों के भीतर रोती हुई बज रही है। उसका करुण भैरवी राग जैसे मेरे सामने खड़ी विछोह की पीड़ा को जाड़े की धूप के साथ दुनिया भर में फैलाए दे रहा हो। आज मेरी मिनी का ब्याह है।

सवेरे से ही बड़ा शोरशराबा और लोगों का आना-जाना शुरु हो गया। आँगन में बाँस बाँधकर शामियाना लगाया जा रहा है, मकान के कमरों और बरामदों पर झाड़ लटकाए जाने की टन-टन सुनाई पड़ रही है। गुहार - पुकार का कोई अंत ही नहीं।

मैं अपने पढ़ने-लिखने वाले कमरे में बैठा खर्च का हिसाब-किताब लिख रहा था कि रहमान आकर सलाम करते हुए खड़ा हो गया।

शुरु में मैं उसे पहचान न सका। उसके पास वह झोली नहीं थी और न चेहरे पर चमक थी। अंत में उसकी मुस्कुराहट देख कर उसे पहचान गया।

'क्यों रहमान, कब आए?' मैंने पूछा।

उसने कहा, 'कल शाम ही जेल से छूटा हूँ।'

यह बात मेरे कानों में जैसे जोर से टकराई। किसी कातिल को मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा था। इसे देखकर मेरा अंतःकरण विचलित सा हो गया। मेरी इच्छा होने लगी कि आज इस शुभ दिन पर यह अदमी यहाँ से चला जाए, तो अच्छा हो।

मैंने उससे कहा, 'आज हमारे घर एक जरूरी काम है। मैं उसी में लगा हुआ हूँ, आज तुम जाओ।'

सुनते ही वह जाने को तैयार हुआ, लेकिन फिर दरवाजे के पास जा खड़ा हुआ और कुछ संकोच से भर कर बोला, 'एक बार खोकी को नहीं देख सकता क्या?'

शायद उसके मन में यही धारणा थी कि मिनी अभी तक वैसी ही बनी हुई है। या उसने सोचा था कि मिनी आज भी वैसे ही पहले की तरह 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला' पुकारती हुई भागती हुई आ जाएगी और उसकी हँसी भरी अद्‌भुत बातों में किसी तरह का कोई फर्क नहीं आएगा। यहाँ तक की पहले की मित्रता की याद कर वह एक पिटारी अंगूर और एक कागज के दोने में थोड़ा किशमिश-बादाम शायद किसी अपने वतनी दोस्त से माँग-मूँग कर ले आया था। उसकी पहले वाली झोली उसके पास नहीं थी।

मैंने कहा, 'आज घर पर काम है। आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।'

वह कुछ उदास सा हो गया। स्तब्ध खड़ा मेरी ओर एकटक देखता रहा, फिर सलाम बाबू कहकर दरवाजे से बाहर निकल गया।

मेरे हृदय में एक टीस सी उठी। सोच रहा था कि उसे बुला लूँ कि देखा वह खुद ही चला आ रहा है।

नजदीक आकर उसने कहा, 'ये अंगूर किशमिश और बादाम खोखी के लिए लाया हूँ, उसको दे दीजिएगा।'

सब लेकर मैंने दाम देना चाहा, तो उसने एकाएक मेरा हाथ पकड़ लिया, कहा, 'आपकी मेहरबानी है बाबू, हमेशा याद रहेगी। मुझे पैसा न दें...। बाबू, जैसी तुम्हारी लड़की है, वैसी मेरी भी एक लड़की है वतन में। मैं उसकी याद कर तुम्हारी खोखी के लिए थोड़ा सा मेवा हाथ में लेकर चला आता था। मैं यहाँ कोई सौदा बेचने नहीं आता।'

इतना कहकर उसने अपने ढीले ढाले कुर्ते के अंदर हाथ डालकर एक मैला सा कागज निकाला और बड़े जतन से उसकी तहें खोलकर दोनों हाथ से उसे मेज पर फैला दिया।

मैंने देखा, कागज पर एक नन्हें से हाथ के पंजे की छाप है। फोटो नहीं, तैल चित्र नहीं, सिर्फ हथेली में थोड़ी सी कालिख लगाकर उसी का निशान ले लिया गया है। बेटी की इस नन्हीं सी याद को छाती से लगाए रहमान हर साल कलकत्ता की गलियों में मेवा बेचने आता था, जैसे

उस नाजुक नन्हें हाथ का स्पर्श उसके विछोह से भरे चौड़े सीने में अमृत घोले रहता था।

देखकर मेरी आँखे भर आईं। फिर मैं यह भूल गया कि वह एक काबुली मेवे वाला है और मैं किसी ऊँचे घराने का बंगाली। तब मैं यह अनुभव करने लगा कि जो वह है, वही मैं भी हूँ। वह भी बाप है और मैं भी। उसकी पर्वतवासिनी नन्हीं पार्वती के हाथों की निशानी ने ही मेरी मिनी की याद दिला दी। मैंने उसी वक्त मिनी को बाहर बुलवाया। घर में इस पर बड़ी आपत्ति की गई, पर मैंने एक न सुनी। ब्याह की लाल बनारसी साड़ी पहने, माथे पर चंदन की अल्पना सजाए दुल्हन बनी मिनी लाज से भरी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर काबुली पहले तो सकपका सा गया, अपनी पुरानी बातें दोहरा न सका। अंत में हँसकर बोला, 'खोखी तुम ससुराल जाओगी?'

मिनी अब ससुराल शब्द का मतलब समझती है। उससे पहले की तरह जवाब देते न बना। रहमान का सवाल सुन शर्म से लाल हो, मुँह फेरकर खड़ी हो गई। काबुली से मिनी की पहले दिन की मुलाकात मुझे याद हो आई। मन न जाने कैसा व्यथित हो उठा।

मिनी के चले जाने के बाद एक लंबी साँस लेकर रहमान वहीं जमीन पर बैठ गया। अचानक उसके मन में एक बात साफ हो गई कि उसकी लड़की भी इस बीच इतनी ही बड़ी हो गई होगी और उसके साथ भी उसे नए ढंग से बातचीत करनी पड़ेगी। वह उसे फिर से पहले वाले रूप में नहीं पाएगा। इस आठ वर्षों में न जाने उसका क्या हुआ होगा। सवेरे के वक्त सर्दियों की उजली कोमल धूप में शहनाई बजने लगी और कलकत्ता की एक गली में बैठा हुआ रहमान अफगानिस्तान के मेरु पर्वतों का दृश्य देखने लगा।

मैंने उसे एक बड़ा नोट निकालकर दिया, कहा, 'तुम अपने वतन अपनी बेटी के पास चले जाओ। तुम दोनों के मिलन-सुख से मेरी मिनी का कल्याण होगा।'

यह रुपया दान करने के बाद मुझे विवाहोत्सव की दो-चार चीज़ें कम कर देनी पड़ीं। मन में जैसी इच्छा थी उस तरह रोशनी नहीं कर सका। किले का अंग्रेजी बैंड भी नहीं मँगा पाया। घर में औरतें बड़ा असंतोष प्रकट करने लगीं, लेकिन मंगल ज्योति में मेरा यह शुभ-आयोजन दमक उठा।

साभार

वो ही मेरे कर्णधार थे



- श्याम श्रीवास्तव 'सनम'

कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।
हे ईश्वर मेरे पापा को, असमय तूने छीना।।
वो ही मेरे कर्णधार थे, वो माँ का शृंगार थे।
घर का वो ही सबलधार थे, हम सबका वो प्यार थे।।
वो अपने कर्तव्य की खातिर, रहे बहाते पसीना।
कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।।
माँ की सूरत देखूँ जब भी, व्याकुल मन हो जाता।
अक्सर बेसुध हो जाती वह, ढाँढस बँधा न पाता।।
पापा के सुंदर सपनों का, मैं हूँ एक नगीना।।
कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।
हृदय विदारक इस पीड़ा को, मैं कैसे सह पाऊँ।
माँ की विरह वेदना को तो, मैं कैसे कह पाऊँ।।
वक्त की आँधी ने है तोड़ा, सुख से भरा सफीना..
कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।।
क्या शिकवा, क्या गिला करूँ मैं, क्या रब से फरियादें।
कोशिश करता हूँ हर पल मैं, कुछ तो कम हो यादें।।
असमय का ये दर्द हमें तो, पल पल होगा पीना।
कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।
मेरी 'सनम' उमर ही क्या है, वज्रपात है टूटा।
भाग्य कहें, तकदीर कहें हम, जिसने मुझको लूटा।।
तू तो है भगवान जगत का, करता भेद कभी ना....
कैसी विपदा प्रभु ये आई, मुश्किल हो गया जीना।।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ दूरसंचार तकनीशियन
उत्तर मध्य रेलवे, डबरा, झाँसी

आत्म बोध



- सुनील कुमार गुप्ता

यद्यपि विद्यार्थी जीवन में हम पढ़ लिख कर ज्ञान प्राप्त करते हैं लेकिन सीखने एवं ज्ञान प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं होती। अनौपचारिक शिक्षा के अंतर्गत मनुष्य जीवन पर्यंत कुछ न कुछ सीखता रहता है। हमें अपने जीवन में माता-पिता, पत्नी, बच्चों, मित्रों, पशु-पक्षियों, जानवरों तथा प्रकृति से सीखने का अवसर मिलता है। हमें जीवन में जिससे भी सीखने का अवसर मिल जाए और हमारे ज्ञान में वृद्धि हो, वही हमारा गुरु है। यद्यपि विद्यालय में अध्ययन करने के लिए उम्र का बंधन है, लेकिन स्वाध्याय के लिए उम्र का कोई बंधन नहीं है। हम किसी भी उम्र में यदि सच्चे मन से अध्ययन करेंगे तो निश्चित रूप से हमें ज्ञान की प्राप्ति होगी। कभी-कभी मनुष्य जानकारी के अभाव में अज्ञानवश या किसी विवशता के कारण अनीतिपूर्ण सामाजिक कार्यों में संलिप्त होकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता है, लेकिन जब ऐसे व्यक्ति का संपर्क किसी सच्चे गुरु से हो जाता है तो भटके हुए व्यक्ति का जब आत्म बोध जागृत होता है तो उसे वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है। ऐसे व्यक्ति जब आत्म बोध जागृत होने पर आगे बढ़ते हैं तो उनका जीवन पूर्णरूपेण परिवर्तित हो जाता है और ऐसे व्यक्ति अपने ज्ञान एवं अच्छी सोच तथा अच्छे कार्यों से समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करते हैं। एक बार एक चोर, चोरी करते हुए पकड़ा गया चोर को सिपाही पकड़ कर ले जा रहे थे कि चोर सिपाहियों से अपने को छुड़ाकर भागा और एक पंडाल में जाकर बैठ गया। वहाँ भागवत कथा हो रही थी। भीड़ बहुत थी, जिस कारण सिपाही चोर को पकड़ न सके। कथावाचक उस समय बता रहे थे कि जीवन में सदैव सच बोलना चाहिए। यदि सच बोलोगे तो भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे। चोर ने सुना और उसका आत्म बोध जागृत हो उठा। उसने अपने जीवन में इस बात को सदा-सदा के लिए आत्मसात कर लिया और तत्क्षण ठान लिया कि आज के बाद जीवन में सदैव सच बोलूँगा। झूठ कभी नहीं बोलूँगा। कथा समाप्ति के पश्चात चोर अपने घर चला गया। यद्यपि चोर ने सदैव सच बोलने की ठान ली, लेकिन जीविकोपार्जन के लिए चोरी करता रहा। एक दिन चोर ने सोचा कि जीवन में छोटी-छोटी तो बहुत चोरी की, आज राजा साहब के यहाँ चोरी करता हूँ। राजा साहब के यहाँ चोरी करने चल दिया। पहले गेट पर द्वारपालों ने पूछा कौन हो तुम? चोर ने कहा मैं चोर हूँ। दूसरे गेट पर द्वारपालों ने पूछा कहाँ जा रहे हो? चोर ने कहा, चोरी करने जा रहा हूँ। द्वारपालों ने सोचा कि महल का कोई कर्मचारी है जो इस तरह से बात कर रहा है। चोर महल में पहुँचकर धन संपदा चुराकर चल दिया। जाते समय द्वारपालों ने पूछा गठरी में क्या लेकर जा रहे हो? चोर ने कहा महल की धन संपदा चोरी कर ले जा रहा हूँ। द्वारपालों ने फिर वही सोचा कि महल का कर्मचारी है। लगता है किसी कारणवश नाराज है, जो इस तरह की बात कर रहा है।

अगले दिन पता चला कि महल में चोरी हो गई। सभी द्वारपालों को बुलाया गया। सभी ने बताया कि कल एक व्यक्ति आया था और उससे हम सभी ने पूछा कि तुम कौन हो? तो उसने बताया कि मैं चोर हूँ और हम सभी ने सोचा कि महल का ही कोई कर्मचारी है और पूँछने पर नाराज होकर इस तरह की बात कर रहा है और चोरी करके चला गया। राजा की आज्ञानुसार चोर को पकड़ा गया। राजा ने चोर से पूछा, कल तुमने महल में चोरी की। चोर ने कहा, हाँ साहब, मैंने चोरी की है। क्या-क्या सामान चुराया? चोर ने कहा महल का जो भी सामान चोरी हुआ है, मैंने चुराया है। राजा ने पूछा कि चोरी क्यों करते हो? चोर ने कहा अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए। राजा ने कहा यदि तुम्हें महल में किसी कार्य की जिम्मेदारी दे दी जाए तो चोरी करना छोड़ दोगे, चोर ने राजा से कहा यदि जीविकोपार्जन की व्यवस्था हो जाएगी तो जीवन में कभी चोरी नहीं करूँगा। राजा साहब ने अपने राजकोष को सँभालने की जिम्मेदारी उस चोर को दे दी। राजा ने पूछा

कि महल में कल चोरी किया गया कोष मिलेगा कि नहीं। चोर ने कहा कि अवश्य मिलेगा और सारा सामान लाकर वापस कर दिया। सच बोलने के कारण चोर का जीवन परिवर्तित हो गया और सम्मानित जीवन जीने लगा। हमारे देश में महर्षि वाल्मीकि, महाकवि कालिदास, गोस्वामी तुलसीदास, अंगुलिमाल आदि ऐसे अनेकों नाम हैं जो अपने आत्म बोध के जागृत होने पर अपने ज्ञान एवं कृत्यों से समाज को एक नई दिशा प्रदान की और सदा के लिए अमर हो गए। महर्षि वाल्मीकि का प्रारंभिक नाम रत्नाकर था और उनका पालन-पोषण जंगल में रहने वाली भील जाति में हुआ था जिस कारण उन्होंने भीलों की परंपरा को अपनाया और आजीविका के लिए डाकू बन गए। अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए वे राहगीरों को लूटते थे एवं आवश्यकता पड़ने पर उन्हें मार भी देते थे। इस प्रकार वे दिन प्रतिदिन अपने पापों का घड़ा भर रहे थे। एक दिन उस रास्ते से नारद मुनि जा रहे थे। उन्हें देखकर रत्नाकर ने उन्हें बंदी बना लिया। नारद मुनि ने उनसे पूछा कि तुम ऐसे पाप कर्म क्यों कर रहे हो? रत्नाकर ने जवाब दिया अपने एवं परिवार के जीवन यापन के लिए। तब नारद मुनि ने पूछा जिस परिवार के लिए तुम यह पाप कर रहे हो, क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारे पापों के फल का भी सहभागी बनेगा, साथ देगा? इस पर रत्नाकर ने जोश के साथ कहा, हाँ, बिलकुल सहभागी बनेगा साथ देगा। मेरा परिवार सदैव मेरे साथ खड़ा रहेगा। नारद मुनि ने कहा एक बार उनसे पूछ लो, अगर वे हाँ कहेंगे तो मैं तुम्हें अपना सारा धन स्वयं दे दूँगा। रत्नाकर ने अपने सभी परिवारजनों एवं मित्रजनों से पूछा लेकिन किसी ने भी इस बात की हामी नहीं भरी। इस बात से डाकू रत्नाकर को बहुत दुख हुआ और आघात भी लगा और उनका आत्म बोध जागृत हो उठा। इसी घटना से उनका हृदय परिवर्तन हो गया और रत्नाकर ने इस घटना के पश्चात पाप कर्म त्याग दिए और जप-तप का मार्ग अपना लिया। रत्नाकर को जप-तप के बारे में कोई ज्ञान नहीं था और उन्होंने नारद जी से ही मार्ग पूछा तब नारद जी ने उन्हें राम नाम का जप करने की सलाह दी।

रत्नाकर ने बहुत लंबे समय तक राम नाम का जप किया पर अज्ञानता के कारण भूलवश वह राम-राम का जप मरा मरा में बदल गया। बहुत दिनों तक तपस्या करने के कारण इनका शरीर दुर्बल हो गया और उनके शरीर पर चीटियाँ लग गई। शायद यही उनके पापों का भोग था। इसी कारण इनका नाम वाल्मीकि पड़ा। कई वर्षों की कठिन तपस्या के पश्चात इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और महर्षि पद प्राप्त हुआ। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत भाषा के आदि कवि माने जाते हैं। एक बार महर्षि वाल्मीक एक क्रौंच पक्षी के जोड़े को निहार रहे थे। वह जोड़ा प्रेमालाप में लीन था, तभी उन्होंने देखा कि एक बहेलिए ने कामरत क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया और मादा पक्षी विलाप करने लगी।

उसके इस विलाप को सुन कर महर्षि की करुणा जाग उठी और द्रवित अवस्था में उनके मुख से स्वतः ही यह श्लोक फूट पड़ा-

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकम्वधीः काममोहितम् ।।

महर्षि वाल्मीकि ने बहेलिए को शाप दिया कि हे निषाद, तुझे कभी भी प्रतिष्ठा न मिले, क्योंकि तुमने क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से काम से मोहित एक का बिना किसी अपराध के ही वध कर डाला। जब महर्षि वाल्मीकि बार-बार उस श्लोक के चिंतन में ध्यानमग्न थे, उसी समय प्रजापिता ब्रह्माजी, मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकि जी के आश्रम में आ पहुँचे। मुनिश्रेष्ठ ने उनका आदर सत्कार किया तब ब्रह्मा जी ने कहा हे मुनिवर! विधाता की इच्छा से ही महाशक्ति सरस्वती आपकी जिह्वा पर श्लोक बनकर प्रकट हुई हैं, इसलिए आप रघुवंशी श्री रामचंद्र जी के जीवन-चरित पर आधारित रामायण की रचना करें। संसार में जब तक इस पृथ्वी पर पहाड़ और नदियाँ रहेंगी तब तक यह रामायण कथा गाई और सुनाई जाएगी। महर्षि वाल्मीकि जी ने संकल्प लिया कि अब मैं रामायण काव्य की रचना करूँगा और वह ध्यानमग्न होकर बैठ गए। अपनी योग-साधना तथा तपोबल के प्रभाव से उन्होंने श्री रामचंद्र, सीता माता एवं अन्य पात्रों के संपूर्ण जीवन-चरित को प्रत्यक्ष देखते हुए संस्कृत में रामायण महाकाव्य की रचना की और अमर हो गए।

महाकवि कालिदास को संस्कृत भाषा के महान कवि के रूप में जाना जाता है। कथाओं और किंवदंतियों के अनुसार कालिदास शारीरिक रूप से बहुत सुंदर थे

और अपने प्रारंभिक जीवन में अनपढ़ और मूर्ख थे। ऐसा कहा जाता है कि राजा शरदानंद की सुंदर एवं विदुषी पुत्री विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा वह उसी के साथ विवाह करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो हार को अपमान समझकर कुछ विद्वानों ने बदला लेने के लिए विद्योत्तमा का विवाह महामूर्ख व्यक्ति के साथ कराने का निश्चय किया। चलते-चलते उन्हें एक वृक्ष दिखाई दिया जहाँ पर एक व्यक्ति जिस डाल पर बैठा था उसी को काट रहा था। उन्होंने सोचा कि इससे बड़ा मूर्ख तो कोई मिलेगा ही नहीं। उन्होंने उसे राजकुमारी से विवाह का प्रलोभन देकर नीचे उतारा और कहा, मौन धारण कर लो और जो हम कहेंगे बस वही करना। उन लोगों ने स्वांग भेष बना कर उन्हें विद्योत्तमा के सामने प्रस्तुत किया कि हमारे गुरु आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आए हैं, परंतु अभी इनका मौन व्रत है इसलिए ए हाथों के संकेत से उत्तर देंगे। इनके संकेतों को समझ कर हम वाणी में आपको उसका उत्तर देंगे। शास्त्रार्थ प्रारंभ हुआ। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ प्रश्न पूछती थी जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे। प्रथम प्रश्न के रूप में विद्योत्तमा ने संकेत से एक उँगली दिखाई कि ब्रह्म एक है, परंतु कालिदास ने समझा कि ए राजकुमारी मेरी एक आँख फोड़ना चाहती है। उन्होंने दो अंगुलियों का संकेत इस भाव से किया कि तू मेरी एक आँख फोड़ेगी तो मैं तेरी दोनों आँखें फोड़ दूँगा, लेकिन कपटी विद्वानों ने उनके संकेत को कुछ इस तरह समझाया कि आप कह रही हैं कि ब्रह्म एक है लेकिन हमारे गुरु जी कह रहे हैं कि ब्रह्म एक है लेकिन सृष्टि में ब्रह्म और जीव दोनों सत्य है। राज कुमारी ने दूसरे प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया कि तत्व पाँच है तो कालिदास को लगा कि यह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है। उसके जवाब में कालिदास ने घूँसा दिखाया। कपटी विद्वानों ने समझाया कि गुरु कहना चाह रहे हैं कि भले ही आप कह रही हो कि पाँच तत्व अलग-अलग हैं- पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि, परंतु इन सभी तत्वों से मिलकर ही उत्तम शरीर का निर्माण हुआ जो ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। अंततः शास्त्रार्थ में विद्योत्तमा ने अपनी हार स्वीकार कर ली और शर्त के अनुसार कालिदास और विद्योत्तमा का विवाह हो गय। विवाह के पश्चात कालिदास विद्योत्तमा को लेकर अपनी कुटिया में आ जाते हैं और प्रथम रात्रि को ही जब दोनों एक साथ होते हैं तो उसी समय ऊँट के चिल्लाने की आवाज सुनाई देती है। विद्योत्तमा कालिदास से आवाज के बारे में संस्कृत में पूँछती है, परंतु कालिदास को संस्कृत ज्ञान नहीं था जिस कारण उनके मुँह से निकल गया उट्र। कालिदास ने अशुद्ध शब्दों का उच्चारण किया जिससे उसी समय विद्योत्तमा को पता चल जाता है कि कालिदास अनपढ़ एवं मूर्ख हैं। विद्योत्तमा ने कालिदास को मूर्ख कहकर उनका बड़ा अपमान किया और धक्का देकर घर से बाहर निकाल दिया।

मनुष्य जब पत्नी द्वारा अपमानित होता है तो उसका ज्ञान चक्षु खुल जाता है और कालिदास के साथ भी वही हुआ। अपमानित होने पर उनका आत्म बोध जागृत हो गया और विद्या अध्ययन कर विद्वान बनने की उत्कंठा उनके मन में जागृत हो उठी। गृह त्याग करने के पश्चात कालिदास जी माँ काली की आराधना करने लगे और माँ काली के उपासक बन गए।

माँ काली ने उन्हें दर्शन दिया एवं आशीर्वाद दिया। माँ काली के वरदान स्वरूप माँ सरस्वती की कृपा से कालिदास ने गहन अध्ययन किया। परिणामस्वरूप परम ज्ञानी एवं संस्कृत के प्रकांड विद्वान बन गए। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात जब वे घर लौटे तो उन्होंने दरवाजा खटखटा कर कहा- 'अनावृतकपाटम् द्वारं देहि। विद्योत्तमा ने चकित होकर कहा- 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।

इस प्रकार कालिदास ने विद्योत्तमा को अपना पथप्रदर्शक गुरु माना और इन तीन शब्दों को लेकर तीन काव्य ग्रंथों की रचना की। अस्ति से कुमार संभव, कश्चिद से मेघदूत और वाग से रघुवंश की रचना की। कालिदास जी ने तीन नाटकों मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुंतलम् तथा दो काव्य ग्रंथ कुमारसंभव एवं रघुवंश तथा दो खंड काव्य ऋतु संहार एवं मेघदूत की रचना की और अमर हो गए।

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सन 1532 ईसवी में उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद में यमुना नदी के किनारे राजापुर नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम

आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास जी अपनी माता के गर्भ में 12 महीने रहने के कारण अत्यधिक स्वस्थ थे और इनका डील-डौल लगभग 5 वर्ष के बालक जैसा था। जन्म के समय बालक तुलसीदास के मुँह में 32 दाँत मौजूद थे और अन्य बालकों की तरह रोए नहीं बल्कि उनके मुख से राम का शब्द निकला, जिस कारण इनका नाम रामबोला पड़ा गया। उनके जन्म के दूसरे ही दिन माँ का निधन हो गया। पिता ने किसी और अनिष्ट की आशंका से बचने के लिए बालक को चुनिया नाम की एक दासी को सौंप दिया और स्वयं विरक्त हो गए। चुनिया ने ही इनका पालन-पोषण किया। जब तुलसीदास साढ़े पाँच वर्ष के हुए तो चुनिया का भी देहाथ हो गया। अब तो बालक अनाथ हो गया और गली-गली भटकता हुआ अनाथों की तरह जीवन जीने को विवश हो गया। तुलसीदास जी का बचपन अनेकानेक आपदाओं के बीच व्यतीत हुआ और बाद में इनका पालन पोषण संत बाबा नरहरि दास जी ने किया और इन्हें ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रदान की। इन्हीं की कृपा से काशी में शेष सनातन जी के पास रहकर 15 वर्षों तक तुलसीदास जी ने वेद, वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि का अध्ययन किया। तत्पश्चात गुरु जी की आज्ञा से अपनी मातृ भूमि वापस लौट आए। वहाँ आकर देखा कि उनका परिवार नष्ट हो चुका है। उन्होंने विधिपूर्वक अपने पिता आदि का श्राद्ध किया और वहीं रहकर लोगों को भगवान राम की कथा सुनाने लगे। कुछ समय पश्चात इनका विवाह राजापुर से थोड़ी ही दूर यमुना पार स्थित पंडित दीनबंधु पाठक की सुंदरी कन्या रत्नावली के साथ हो गया और अपनी नवविवाहिता वधू के साथ सुखपूर्वक रहने लगे। वे अपनी रूपवती पत्नी के प्रति बहुत आसक्त थे। एक बार उनकी पत्नी अपने भाई के साथ मायके चली गई तो तुलसीदास जी भी भयंकर अंधेरी रात में उफनती यमुना नदी तैरकर पार किया और अपने ससुराल पहुँचकर सीधे अपनी पत्नी के शयन कक्ष में जा पहुँचे। रत्नावली रात्रि में अपने पति को अकेले आया देखकर आश्चर्य चकित हो गई। उसने लोकलाज के भय से वापस जाने को कहा, लेकिन तुलसीदास उससे उसी समय घर वापस चलने का आग्रह करने लगे। उनकी इस अप्रत्याशित जिद से खीझकर रत्नावली ने उनको बहुत धिक्कारा और कहा कि-

लाज न आवत आपको दौरे आयहु साथ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौ मैं नाथ।।
अस्थि चर्म मय देह मम तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो श्री राम मह होती न तो भवभीति।।

कोई भी पति जब पत्नी द्वारा धिक्कारा जाता है तो उसके ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं और तुलसीदास जी के साथ भी वही हुआ। रत्नावली की बात सुनकर तुलसीदास जी को बहुत ग्लानि हुई और उनका आत्म बोध जागृत हो उठा। तुलसीदास जी वहाँ एक पल भी नहीं रुके और उनके मन में तत्क्षण वैराग्य उत्पन्न हो गया। वहाँ से चलकर तुलसीदास जी प्रयाग आए और गृहस्थ वेश का परित्याग कर साधु वेश धारण कर लिया और भजन कीर्तन करते हुए काशी पहुँचे और वहाँ तुलसीदास जी राम कथा कहने लगे। वहाँ उन्हें एक दिन एक प्रेत मिला जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बतलाया। हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास ने उनसे श्री रघुनाथ जी का दर्शन कराने की प्रार्थना की। हनुमान जी ने कहा तुम्हें चित्रकूट में रघुनाथ जी के दर्शन होंगे। इस पर तुलसीदास जी चित्रकूट की ओर चल पड़े। चित्रकूट पहुँचकर रामघाट पर उन्होंने अपना आसन जमाया। एक दिन वे प्रदक्षिणा करने निकले थे कि मार्ग में उन्हें श्री राम के दर्शन हुए। उन्होंने देखा कि दो बड़े ही सुंदर राजकुमार घोड़ों पर सवार होकर धनुष बाण लिए जा रहे हैं। तुलसीदास जी उन्हें देखकर मुग्ध हो गए, परंतु उन्हें पहचान न सके। पीछे से हनुमान जी ने आकर उन्हें सारा भेद बतलाया तो तुलसीदास जी पश्चाताप करने लगे। हनुमान जी ने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि प्रातः काल फिर दर्शन होंगे। अगले दिन मौनी अमावस्या बुधवार के दिन उनके सामने भगवान श्रीराम पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बाल रूप में तुलसीदास जी से कहा, बाबा हमें चंदन दो। हनुमान जी ने सोचा तुलसीदास इस बार भी धोखा न खा जाए। इसलिए उन्होंने तोते का रूप धारण करके यह दोहा कहा

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक देत रघुवीर।।

तुलसीदास जी उस अद्भुत छवि को निहार कर शरीर की सुध-बुध भूल गए। भगवान ने स्वयं अपने हाथ

से चंदन लेकर अपने तथा तुलसीदास जी के मस्तक पर लगाया और अंतर्धान हो गए। चित्रकूट में प्रभु श्री राम के दर्शन के पश्चात तुलसीदास जी प्रयाग आए और यहाँ कुछ दिन रुकने के पश्चात पुनः काशी चले गए और वहाँ उनके अंदर कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ और वे संस्कृत में पद्य रचना करने लगे। परंतु दिन में वे जितने पद्य रचते रात्रि में सब लुप्त हो जाते। यह घटना रोज घटती। आठवें दिन तुलसीदास जी को स्वप्न हुआ कि तुम अयोध्या में जाकर रहो और अपनी भाषा हिंदी में काव्य रचना करो। तुलसीदास जी काशी से अयोध्या चले गए और हिंदी में रामचरितमानस की रचना प्रारंभ की और 02 वर्ष 07 महीने 26 दिन में रामचरितमानस की रचना पूर्ण करने के पश्चात तुलसीदास जी पुनः अयोध्या से काशी चले आए और भगवान विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा को रामचरितमानस सुनाया। रामचरितमानस आदर्श गृहस्थ जीवन, राजधर्म, पारिवारिक जीवन, पतिव्रत धर्म, भ्रातृधर्म के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति ज्ञान, त्याग, वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाला हिंदी भाषा का एक अद्वितीय ग्रंथ है। यदि रामचरितमानस को नियमित रूप से पढ़ा जाए और इसे अपने जीवन में आत्मसात कर इसके अनुरूप आचरण किया जाए तो निश्चित रूप से हमारा जीवन सफल हो जाएगा।

रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्नावली, हनुमान बाहुक, रामलला नहछू आदि इनकी प्रसिद्ध रचनों हैं। तुलसीदास जी वाराणसी में असी घाट पर रहते थे। सन 1623 ईस्वी में काशी में राम राम कहते हुए उन्होंने अपने शरीर का परित्याग किया।

अंगुलिमाल प्राचीन समय की बात है, मगध राज्य में सोनापुर नाम का एक गाँव था। डाकू अंगुलिमाल के भय से उस गाँव के लोग शाम होते ही अपने घर आ जाते थे और सुबह होने से पहले कोई भी घर के बाहर कदम नहीं रखता था। एक बार महात्मा बुद्ध उपदेश देने उस गाँव में आए। उपदेश का कार्यक्रम समाप्त होते ही उन्होंने लोगों को अत्यंत भयभीत देखा। लोग सूर्यास्त होते ही अपने घरों की ओर तेजी से जाने लगे। महात्मा बुद्ध ने इस भय का कारण जानना चाहा तो उन्हें ज्ञात हुआ की अंगुलिमाल नाम का डाकू गाँव के पास जंगल की गुफा में रहता है जिसने हजार लोगों की हत्या करने की प्रतिज्ञा ले ली है। फलस्वरूप वह उस गाँव के पास वाले जंगल से होकर गुजरने वाले पथिकों को लूटकर उनकी निर्मम हत्या कर देता है और उसकी एक उँगली काट कर अपने माला में गूंथ कर पहन लेता है इसलिए उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया है। महात्मा बुद्ध ने जब लोगों की चिंतों सुनी, भय का कारण जाना तो उन्होने उस जंगल से होकर जाने का निश्चय किया। गाँव वालों ने उन्हें बहुत समझाया कि आप उस रास्ते मत जाइए, नहीं तो वह राक्षस आपकी भी हत्या कर देगा पर वो नहीं माने। महात्मा बुद्ध जंगल के बीच से होकर जा रहे थे, बुद्ध को आते देख अंगुलिमाल हाथों में तलवार लेकर खड़ा हो गया, पर बुद्ध उसकी गुफा के सामने से निकल गए उन्होंने पलटकर भी नहीं देखा। अंगुलिमाल ने कहा रुको। महात्मा बुद्ध यह सुनकर भी अनसुना कर दिए और चलते रहे। अंगुलिमाल अपने पूरे सामर्थ्य से बुद्ध का पीछा करता रहा लेकिन उनके दिव्य प्रभाव के कारण उन तक पहुँच नहीं पाया। थक हार कर उसने क्रोध से बोला 'मैं कहता हूँ रुक जा नहीं तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा क्योंकि तुम हजारवाँ शिकार हो, तुम्हारी अंगुलियों को काटकर मैं अपनी गुरुदक्षिणा और प्रतिज्ञा पूरी करूँगा। बुद्ध ने मुस्कुराकर शांत स्वर में कहा मैं तो कब का रुक गया पर तुम कब रुकोगे। अंगुलिमाल ने कहा, संन्यासी तुम्हें मुझसे डर नहीं लगता। सारा मगध मुझसे डरता है। तुम्हारे पास जो भी माल है, निकाल दो वरना जान से हाथ धो बैठोगे। मैं इस राज्य का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हूँ। बुद्ध जरा भी नहीं घबराए और बोले मैं ए कैसे मान लूँ कि तुम इस राज्य के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हो। तुम्हें ए साबित करके दिखाना होगा, अंगुलिमाल बोला बताओ कैसे साबित करना होगा। बुद्ध ने कहा तुम उस पेड़ से दस पत्तियाँ तोड़ कर लाओ। अंगुलिमाल ने कहा, बस इतनी सी बात, मैं तो पूरा पेड़ उखाड़ सकता हूँ। अंगुलिमाल ने दस पत्तियाँ तोड़कर ला दी। बुद्ध ने कहा अब इन पत्तियों को वापस पेड़ पर जाकर लगा दो। अंगुलिमाल ने हैरान होकर कहा, कैसी नासमझ बातें कर रहे हो संन्यासी, जो भला एक बार कट गया तो उसको कैसे जोड़ा जा सकता है। बुद्ध ने कहा

मैं भी तुझे वही बताने आया हूँ। जब एक पत्ते को पेड़ से जोड़ने का सामर्थ्य तुझमें नहीं है तो तुम सबसे शक्तिशाली कैसे हुए, तुम्हें तोड़ने का अधिकार किसने दे दिया। तोड़ना बहुत सरल है और जोड़ना बहुत कठिन है। यदि तुम किसी चीज को जोड़ नहीं सकते तो कम से कम उसे तोड़ो मत। यदि किसी को जीवन दे नहीं सकते तो उसे मृत्यु देने का भी तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। यह सुनकर अंगुलिमाल का आत्म बोध जागृत हो उठा और उसे अपनी गलती का अहसास हो गया। उसके हाथ से कटार छूटकर जमीन पर गिर पड़ी, आँखों से अश्रु धारा बहने लगी। अंगुलिमाल ने अंगुलियों की माला बुद्ध के चरणों में डाल दी और उनका शिष्य बन गया और बुध के पीछे-पीछे गाँव की ओर चल पड़ा। आगे चलकर यही अंगुलिमाल बहुत बड़ा संन्यासी बना और अहिंसक के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा बौद्ध भिक्षु बनकर आजीवन लोगों की सेवा में लगा रहा।

सहायक सचिव, रेलवे भर्ती बोर्ड

प्रयागराज

समय

- अनुराग पाठक

समय - समय की बात है,
समय प्रातः का प्रभात है।
समय पुण्यों का प्रताप है,
समय पाप का संताप हैं।
समय स्वयं पर आघात है,
समय प्रत्एक अघात का प्रतिघात है।।
समय युद्ध का उपघात है।
समय शांति की शुरुआत है।
समय शून्य का एकांत है,
समय अद्भुत, अनवरत, असंगत, अशांत है
समय - समय की बात है।

गार्ड, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज

लाचारी



- के.जी. गोस्वामी

बहुत दूर चले गए वे जो कभी पास थे,
हमीं नहीं आपके अपने सब उदास थे,
क्यों मौन हैं सभी आज के हालात पर,
मज़बूरी या लाचारी मन के उपहास पर।

चले जाना किसी का बड़ा दुखदायी होता है,
भले कुछ चुप हों पर ज्यादातर दिल रोता है,
दर्द उसी को सहना है जो अपनों को खोता है,
अंतिम दर्शन भी दुर्लभ कभी पास जो होता है।

डर रहा है दिल अब आंसू आंखों के सूख गए,
कैसा आया वक्त ए सब एक दूसरे से दूर गए,
ए गया वो गया बस आ रहीं खबरे चंहु ओर से,
झकजोरती मानवता अब क्या यूँ विनास होता है।

वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक/सा. एवं कोचिंग

उत्तर मध्य रेलवे, आगरा

राजभाषा प्रश्नमाला

1. हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?
   (क) 26 जनवरी
   (ख) 15 अगस्त
   (ग) 14 सितंबर
   (घ) 10 दिसंबर

2. बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषाओं को 8वीं अनुसूची में कब सम्मिलित किया गया?
   (क) 2004
   (ख) 1992
   (ग) 1963
   (घ) 1967

3. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी की परिभाषा किस नियम के अंतर्गत दी गई है?
   (क) नियम 6 के उपनियम (2) के अंतर्गत
   (ख) नियम 8 के अंतर्गत
   (ग) राजभाषा नियम 1976, के नियम 9 के अंतर्गत
   (घ) नियम 5 के अंतर्गत

4. राजभाषा नियम, 1976 के किस नियम के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जोंगे?
   (क) नियम-2
   (ख) नियम-3
   (ग) नियम-4
   (घ) नियम-5

5. राजभाषा नियम 1976 के अधीन वर्गीकृत तीन क्षेत्र क्या-क्या हैं?
   (क) 1, 2, एवं 3
   (ख) क, ख एवं ग
   (ग) च, छ एवं ज
   (घ) पूर्व, पश्चिम एवं उत्तर

6. संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषों सम्मिलित हैं?
   (क) 22
   (ख) 18
   (ग) 16
   (घ) 24

7. रेल कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए काव्य संग्रह के लिए कौन-सी पुरस्कार योजना चलाई जा रही है?
   (क) मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना
   (ख) महादेवी वर्मा पुरस्कार योजना
   (ग) प्रेमचंद पुरस्कार योजना
   (घ) सुमित्रानंदन पंत पुरस्कार योजना

8. मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना के तहत प्रदान किए जाने वाले प्रथम पुरस्कार की राशि कितनी है?
   (क) ₹ 20,000
   (ख) ₹ 15,000/-
   (ग) ₹ 10,000/-
   (घ) ₹ 7,000/-

9. क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कब-कब होती है?
   (क) माह में एक बार
   (ख) दो माह में एक बार
   (ग) तीन माह में एक बार
   (घ) छः माह में एक बार

10. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कब-कब होती है?
    (क) माह में एक बार
    (ख) दो माह में एक बार
    (ग) तीन माह में एक बार
    (घ) छः माह में एक बार

11. संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य कौन होते हैं?
(क) लोकसभा के सदस्य
(ख) राज्यसभा के सदस्य
(ग) लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य
(घ) राज्य विधान मंडल के सदस्य

12. संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद कौन करता है?
(क) गृह मंत्रालय
(ख) रेलवे बोर्ड
(ग) रेल मंत्रालय
(घ) विधि मंत्रालय

13. कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक पुरस्कार किस स्तर के अधिकारी को दिया जाता है?
(क) प्रमुख विभागाध्यक्ष
(ख) राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी को
(ग) महाप्रबंधक एवं उनसे ऊपर स्तर के अधिकारियों को
(घ) सभी अधिकारियों को

14. हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारी की परिभाषा किस नियम के अंतर्गत दी गई है?
(क) नियम 6 के अंतर्गत
(ख) नियम 8 के अंतर्गत
(ग) राजभाषा नियम 5 (1) के अंतर्गत
(घ) राजभाषा नियम 1976, के नियम 10 के अंतर्गत

15. निम्नलिखित दस्तावेजों में से कौन से दस्तावेज द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य हैं?
(क) सामान्य आदेश
(ख) संकल्प
(ग) संविदाएं
(घ) सभी

16. निम्नलिखित दस्तावेजों में से कौन सा दस्तावेज धारा 3(3) के अंतर्गत नहीं आता है?
(क) करार
(ख) प्रेस विज्ञप्तियां
(ग) निविदा सूचना
(घ) कोई नहीं

17. संविधान के अनुच्छेद 351 के निदेश के अनुसार, हिंदी को अपने शब्द भंडार के संवर्धन के लिए मुख्यतः किस भाषा पर आश्रित रहना चाहिए?
(क) उर्दू
(ख) हिंदी
(ग) पंजाबी
(घ) संस्कृत

18. संविधान के किस अनुच्छेद में न्यायालयों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में प्रावधान दिया गया है?
(क) अनुच्छेद 345
(ख) अनुच्छेद 346
(ग) अनुच्छेद 350
(घ) अनुच्छेद 348

19. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश किस अनुच्छेद में दिए गए हैं?
(क) अनुच्छेद 343
(ख) अनुच्छेद 349
(ग) अनुच्छेद 351
(घ) अनुच्छेद 346

20. प्रत्येक विभाग के अधिकारियों हेतु हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए कुल कितने पुरस्कार निर्धारित हैं और उनकी धनराशि क्या है?
(क) कुल 1 पुरस्कार ₹ 10,000/-
(ख) कुल 4 पुरस्कार प्रत्येक को ₹ 2,000/-
(ग) कुल 5 पुरस्कार प्रत्येक को ₹ 3,000/-
(घ) कुल 2 पुरस्कार प्रत्येक को ₹ 5,000/-

21. रेल मंत्रालय के कार्यालयों का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन सी उप-समिति द्वारा किया जाता है?
(क) पहली उप समिति
(ख) दूसरी उप समिति
(ग) तीसरी उप समिति
(घ) चौथी उप समिति

22. रेलवे स्टेशनों पर उद्घोषणा किस भाषा क्रम में की जाती है?
(क) हिंदी, अंग्रेजी
(ख) स्थानीय, हिंदी, अंग्रेजी
(ग) प्रादेशिक, अंग्रेजी, हिंदी
(घ) प्रादेशिक, हिंदी, अंग्रेजी

23. राजभाषा नियम, 1976 में कुल कितने नियम है?
(क) 9
(ख) 10
(ग) 11
(घ) 12

24. राजभाषा नियम, 1976 किस राज्य पर लागू नहीं हैं?
(क) कर्नाटक
(ख) केरल
(ग) आंध्रप्रदेश
(घ) तमिलनाडु

25. राजभाषा के प्रयोग के संदर्भ में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में आता है?
(क) 'क' क्षेत्र
(ख) 'ख' क्षेत्र
(ग) 'ग' क्षेत्र
(घ) इनमें कोई नहीं

26. राजभाषा नियम 1976 में कब-कब संशोधन किया गया है?
(क) वर्ष 1984 एवं 2009 में
(ख) वर्ष 1985 एवं 2010 में
(ग) वर्ष 1986 एवं 2011 में
(घ) वर्ष 1987, 2007 एवं 2011 में

27. निम्नलिखित में से कौन-से राज्य की द्वितीय राजभाषा संस्कृत है?
(क) हिमाचल प्रदेश
(ख) असम
(ग) उत्तर प्रदेश
(घ) उत्तराखंड

28. संविधान को 71वें संशोधन द्वारा किस भाषा को अष्टम अनुसूची में शामिल किया गया?
(क) नेपाली
(ख) हिंदी
(ग) सिंधी
(घ) उर्दू

29. सरकारी कर्मचारियों को दिए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना के प्रथम पुरस्कार की राशि कितनी है?
(क) ₹ 1,00,000 नकद प्रमाण-पत्र तथा स्मृति चिह्न
(ख) ₹ 75,000 नकद प्रमाण-पत्र तथा स्मृति चिह्न
(ग) ₹ 60,000 नकद प्रमाण-पत्र तथा स्मृति चिह्न
(घ) ₹ 30,000 नकद प्रमाण-पत्र तथा स्मृति चिह्न

30. क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?
(क) महाप्रबंधक
(ख) अपर महाप्रबंधक
(ग) मुख्य राजभाषा अधिकारी
(घ) उप महाप्रबंधक

31. हिंदीतर भाषी राज्यों में नाम बोर्ड, पदनाम बोर्ड एवं सूचना बोर्ड को नियमानुसार किस क्रम में प्रदर्शित किया जाना अपेक्षित है?
(क) हिंदी भाषा, अंग्रेजी भाषा, क्षेत्रीय भाषा
(ख) क्षेत्रीय भाषा, हिंदी भाषा, अंग्रेजी भाषा
(ग) क्षेत्रीय भाषा, अंग्रेजी भाषा, हिंदी भाषा
(घ) अंग्रेजी भाषा, क्षेत्रीय भाषा, हिंदी भाषा

उत्तरमाला

1.(ग), 2.(क), 3.(ग), 4.(घ), 5.(ख), 6.(क), 7.(क), 8.(क), 9.(ग), 10.(घ), 11.(ग), 12.(घ), 13.(ग), 14.(घ), 15.(घ), 16.(घ), 17.(घ), 18.(घ), 19.(ग), 20.(घ), 21.(ख), 22.(घ), 23.(घ), 24.(घ), 25.(क), 26.(घ), 27.(घ), 28.(क), 29.(क), 30.(क), 31.(ख)

उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा संचालित गतिविधियाँ













उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2021 की झलकियाँ

















महाप्रबंधक कार्यालय, उत्तर मध्य रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित और कैक्सटन प्रेस,
बाई का बाग, प्रयागराज मोबाइल – 9307770002 द्वारा मुद्रित (निःशुल्क वितरण के लिए)